RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

# शिव अमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
वर्ष-10, अंक-11, हिन्दी (मासिक), नवंबर 2023, पृष्ठ 16, मूल्य- 12:50

मुख्यालय शांतिवन में वैश्विक शिखर सम्मेलन आयोजित

देश-विदेश से नामचीन हस्तियों ने की शिरकत

नए युग के लिए दिव्य ज्ञान विषय पर आयोजन

# राजयोग के दिव्य ज्ञान से नए युग का स्वप्न होगा साकार

**04** दिवसीय वैश्विक शिखर सम्मेलन **06** हजार लोगों ने लिया भाग

06 सत्रों में विद्वानों ने किया चिंतन-मंथन

**50** से अधिक वक्ताओं ने किया संबोधित **05** देशों के प्रतिनिधि ने बढ़ाई शोभा

**आबू रोड (राजस्थान)।**

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन परिसर में चार दिवसीय (22 से 25 सितंबर) वैश्विक शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। नए युग के लिए दिव्य ज्ञान विषय पर आयोजित सम्मेलन में छह सत्रों में वक्ताओं ने चिंतन-मंथन कर निष्कर्ष निकाला कि वसुधैव कुटुम्बकम की भावना और एक ईश्वर-विश्व एक परिवार के ज्ञान के आधार से ही नए युग की संकल्पना साकार हो सकती है। अध्यात्म और राजयोग का दिव्य ज्ञान ही नए युग का सूत्रपात कर सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान से ही विश्व शांति आएगी। वहीं सांस्कृतिक संध्या में हैदराबाद से आए कलाकारों ने देश के अलग-अलग संस्कृतियों की छटा बिखेरी।

## परमात्मा एक है और हम सभी आत्माएं हैं : मुख्यमंत्री

शुभारंभ पर असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंता बिश्वा शरमा ने कहा कि हमारा देश हजारों वर्षों से आध्यात्मिकता का केंद्र रहा है। मैं समझता हूं कि भारत की सनातन सभ्यता और संस्कृति पांच हजार साल पुरानी है जो भारत का मूलभूत गौरव है। हमने जो ज्ञान ऋषि-मुनियों से सीखा है वही ज्ञान हमारे संविधान में समाहित किया गया है। भारत का संविधान हमारी शिक्षा, सभ्यता और संस्कार से प्रेरित है, जो कहता है कि हमें संविधान के आधार पर चलना चाहिए। लेकिन मैं कहता हूं कि उससे पहले हम पुरातन शिक्षा के आधार पर चलें तो अच्छा इंसान बन सकते हैं। सदाचार, सच्चाई, सद्भाव, अहिंसा, दया, प्रेम, करुणा, क्षमा, धैर्य हमारे मूल्य हैं। इनसे ही व्यक्ति के चरित्र का निर्धारण किया जाता रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें भगवत गीता सिखाती है कि कर्म का मूल धर्म होना चाहिए। भगवत गीता हमें सन्यास लेने के लिए नहीं कहती है। आप कर्म करो और भगवान को अर्पण करो। यही जीवन का मार्ग है। मानव मात्र निमित्त होता है जो करते हैं भगवान करते हैं। हमारा मूल ज्ञान यही है कि परमात्मा एक हैं और हम सभी आत्माएं हैं। गलत कर्म परमात्मा से दूर कर देते हैं। जब हम परोपकार, पुण्य कर्म करते हैं तो परमात्मा से पुनः मिल सकते हैं। सेवा से आत्मा निर्मल होती है। निर्मल आत्मा, परमात्मा की सबसे प्रिय और पास होती है।

## अध्यात्म की विरासत छोड़ गए हैं हमारे संत

मुख्यमंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में हमें आत्मा को परमात्मा से मिलाने का ज्ञान दिया जाता है। वर्ष 1937 में इस संगठन की शुरुआत की गई थी जो आज विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक संगठन बन चुका है। ये भारत की गौरवगाथा को विश्व में प्रसारित कर रहा है। महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानंद, आदि शंकराचार्य जैसे संत-महात्मा, ऋषि मानव जाति के लिए अध्यात्म की विरासत छोड़ गए हैं। ब्रह्माकुमारीज़ लोगों में आंतरिक शांति और बदलाव लाने में जुटी है। यहां के ज्ञान और शिक्षा से लोगों में सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का यह नारा साकार हो रहा है। लोगों का जीवन बदला है और सुख-शांति आई है। मैं पहली बार यहां आया हूं। यहां लोगों का समर्पण भाव, शांति और पवित्रता देखकर मन पवित्र महसूस कर रहा है।

## भारत ही एकमात्र देश है जो विश्व को दिशा, शांति और धर्म दे सकता है : केंद्रीय मंत्री खुबा

केंद्रीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री भगवंत खुबा ने कहा कि भारत ही एकमात्र देश है जो विश्व को दिशा, शांति और धर्म दे सकता है। एक बार फिर से दुनिया को प्रेरित करने का समय आया है। विज्ञान का मानवहित में होना जरुरी है। जी-20 सम्मेलन में भारत ने विश्व को दिखाया है कि हम वसुधैव कुटुम्बकम की बात सोचते ही नहीं करते भी हैं। जब तक नारी शक्ति का उपयोग विश्व पूर्ण क्षमता के साथ नहीं करता है तब तक पूरा विकास नहीं कर सकता है। जो बातें हम करते हैं उसे आचरण में लाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। अतिथियों ने मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी से मिलकर आर्शीवाद लिया।

## असम में कई क्षेत्रों में सेवाएं जारीं-

मुख्यमंत्री शरमा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ की राजयोगिनी बीके शीला दीदी के मार्गदर्शन में असम में सेवाएं की जा रही हैं। गुवाहाटी में ही 25 से अधिक सेवाकेंद्रों से अध्यात्म का संदेश दिया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ प्रदेश सहित देश व विश्वभर में यौगिक खेती, नशामुक्ति, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण, महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही है।

## आत्मा को परमात्मा से जोड़ रही है संस्था

हरिद्वार से सांसद व पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल (निशंक) ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ आत्मा को परमात्मा से जोड़ रही है। मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने और संकल्प से सिद्धी की ओर की ब्रह्माकुमारीज़ की यह यात्रा प्रेरणास्रोत है। यहां से जुड़े ब्रह्माकुमार भाई-बहनें इस यात्रा के साक्षी हैं। नारियों को जो सम्मान और स्थान इस विश्व विद्यालय में दिया जाता है वह और कहीं देखने को नहीं मिलता है। हमने पूरी पृथ्वी को मां कहा है।

# धर्म ग्रंथों का संदेश है कि जीवन कैसे जीना है, आत्मा-मन अध्यात्म शास्त्र हैं, इसे जानना जरूरी

**वैश्विक शिखर सम्मेलन : जनप्रतिनिधियों, न्यायाधीश, कलाकार से लेकर व्यापारी और शिक्षाविदों ने किया संबोधित**

**आबू रोड (राजस्थान)।** वैदिक काल से हमारी परिपाटी है कि हमने संपूर्ण विश्व को अपना परिवार समझा है। भारत ने इस संस्कृति का सदैव पालन और अनुसरण किया है। भारत ने कभी भी राज्यसत्ता के लिए साम्राज्यवादी विचारधारा से दूसरे देशों पर आक्रमण नहीं किया है। भगवान बुद्ध ने अपने विचारों को दुनियाभर में फैलाया।

## ब्रह्माकुमारीज़ जैसे प्रांगण में आत्मा पवित्र होती है

ब्रह्माकुमारीज़ सबसे अच्छा प्रांगण है जो आध्यात्मिकता से जोड़ता है। राजयोग से जीवन में सुख-शांति और पवित्रता आती है। किसी भी व्यक्ति, समाज और देश में परिवर्तन सिर्फ आध्यात्मिकता से ही लाया जा सकता है। यहां आकर जो शांति और शक्ति मिली उसे बयां नहीं कर सकती हूं। ब्रह्मा बाबा की दूरदर्शिता का कमाल है कि उन्होंने नारियों के हाथ में संस्था को सौंपा।

**- न्यायमूर्ति मंजू रानी चौहान,** उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

## यहां का मैनेजमेंट, सेवाभाव और साफ-सफाई सब कुछ सीखने लायक है

किसी भी प्रतियोगिता, खेल में सफल होने के लिए मानसिक रुप से मजबूत होना जरुरी है। अध्यात्म और मेडिटेशन से हम अपने मन को सशक्त और मजबूत बना सकते हैं। अध्यात्म में ही वह शक्ति है जो वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को साकार रुप दिया जा सकता है। शांतिवन में आकर बेहद खुशी हुई। यहां का मैनेजमेंट, सेवाभाव और साफ-सफाई सबकुछ सीखने लायक है।

**- पीवी सेट्टी,** कमेटी सदस्य, बीसीसीआई और आईपीएल

## हमारे वेद-ग्रंथों में हमेशा शांति की ही बात की गई है

भारत ने शुरु से ही विश्व शांति का अग्रदूत रहा है। हमारे वेद-ग्रंथों में हमेशा शांति की बात की गई है। आंतरिक शांति पर जोर दिया गया है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था समाज के उत्थान के लिए बहुत सराहनीय कार्य कर रही है। संस्था द्वारा दिए जा रहे राजयोग मेडिटेशन के ज्ञान से लोगों के जीवन में मूल्य आ रहे हैं।

**- चित्तरंजन चट्टोपाध्याय,** अध्यक्ष, बैंकिंग और बीमा समिति और आईसीएमए परिषद सदस्य

## देवता बनने दिव्यगुण अपनाने होंगे

बदलती दुनिया के साथ हमें खुद को भी बदलना है। हमें पूज्यनीय बनना है। नर से देव-देवी के समान बनना है तो दिव्यगुण अपनाने होंगे। जब यहां से जाएं तो अपनी झोली दिव्यगुणों से भरकर ले जाएं। राजयोग मेरे जीवन में नया प्रकाश लेकर आया। हजारों बेघर लोगों की जिंदगी बदलने की प्रेरणा मिली।

**- पीटर कुमार,** वाइस प्रेसिडेंट, ऑपरेशन एवं सेल्स, लैप ग्रुप, बिजनेसमैन ऑफ द ईयर अवार्ड से सम्मानित, यूएसए

## आत्मा-परमात्मा का ज्ञान मिल रहा

ब्रह्माकुमारीज़ से अच्छी कोई जगह नहीं हो सकती है जहां आत्मा और परमात्मा का ज्ञान मिल रहा है। यहां जो सुबह ज्ञान मुरली चलती है उससे हमें रोज परमात्मा की शिक्षा मिलती है। संस्था का मैनेजमेंट इतना आसान तरीके से चलने के पीछे की वजह यहां लोगों को आत्मिक ज्ञान,समर्पण भाव,मेडिटेशन है।

**- आनंद पोद्दार,** चेयरमैन, पोद्दार ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज

## इस ज्ञान से सोच बदल जाती है

अपने गुस्से को कंट्रोल में रखें तो इससे प्रकृति बचाने में मदद मिलेगी। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से हमारा सोचने का नजरिया बदल जाता है। सोच सकारात्मक हो जाती है। ब्रह्माकुमारीज़ सारे विश्व में नारी शक्ति की मिसाल है। ये बहनों विश्व शांति के कार्य में लगी हुई हैं। अध्यात्म से ही विश्व में शांति और बदलाव आएगा।

**- आरसी मित्तल,** कुलपति, मेडीकैप्स यूनिवर्सिटी, इंदौर

## जीवन बदलने में जुटी है संस्था

ब्रह्माकुमारीज़ आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा भारत सहित नेपाल में लोगों का जीवन बदलने में जुटी है। अध्यात्म हमें सकारात्मक बना देता है। ऐसे प्रयासों से ही विश्व शांति आएगी। आज पूरे विश्व को आध्यात्मिक ज्ञान की बहुत जरुरत है। अध्यात्म में ही वह शक्ति है जो व्यक्ति में बदलाव ला सकता है।

**- नहाकुल सुबेदी,** न्यायाधीश, सुप्रीम कोर्ट, नेपाल

## विचारधारा के साथ आगे बढ़ना होगा

हमें एक विचारधारा के साथ आगे बढ़ना होगा, तभी विश्व शांति आएगी। ब्रह्माकुमारीज़ शांति का संदेश देकर सामाजिक बदलाव में बड़ी भूमिका निभा रही है। राजयोग के ज़ान से लोगों का जीवन बदल रहा है। मेरे पिताजी लंबे समय तक संस्था से जुड़े रहे और आध्यात्मिक ज़ान का उनके जीवन में काफी प्रभाव रहा।

**- प्रकाश मान सिंह,** पूर्व उप प्रधानमंत्री व सांसद, नेपाल

## अध्यात्म से ही होगा आंतरिक बदलाव

जब हमारे अंदर नैतिक मूल्य आएंगे तो निश्चित रुप से परिवर्तन आएगा। ब्रह्माकुमारीज़ विश्व स्तर पर लोगों में आंतरिक बदलाव लाने के लिए सेवा में जुटी है। अध्यात्म के बिना आंतरिक बदलाव संभव नहीं है। नेपाल में द्वारा 50 साल से सेवाएं की जा रही हैं। संस्था द्वारा नेपाली कलाकारों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

**- डॉ. शंकर प्रसाद शर्मा,** भारत में नेपाल के राजदूत

# एक ईश्वर- विश्व एक परिवार के संकल्प के साथ आगे बढ़ रही है ब्रह्माकुमारीज़

## वैश्विक शिखर सम्मेलन

### अध्यात्म जगत के सितारों ने अपने आध्यात्मिक अनुभवों से किया मार्गदर्शन, दो सत्रों में चला सम्मेलन

**आबू रोड (राजस्थान)।** वैश्विक शिखर सम्मेलन में चले छह सत्रों में ब्रह्माकुमारीज़ के वरिष्ठ भाई-बहनों ने राजयोग मेडिटेशन और परमात्मा ज्ञान पर संबोधित किया। सभी ने एक स्वर में कहा कि राजयोग ज्ञान और परमात्म शिक्षा से ही नई दुनिया आएगी। जन्मोजन्म का भाग्य बनाने का अभी स्वर्णिम काल चल रहा है।

### एक ईश्वर- विश्व एक परिवार

आज इस बात की चर्चा नहीं होती है कि हम कैसे हैं, हमारा जीवन कैसा है? हमारा स्वास्थ्य अच्छा है? हम लोगों की सेवा में लगे हैं इन बातों की चर्चा कम होती है। ऋषियों, संतों के सान्निध्य में जाकर हमें नए विचारों की प्रेरणा मिलती है। ब्रह्माकुमारीज़ एक ईश्वर- विश्व एक परिवार के संकल्प के साथ आगे बढ़ रही है यह गौरव की बात है। इन बहनों का समर्पण सराहनीय है। शांतिवन साधना और तपस्या की तपस्थली है। जीवन के क्रम में साधना एक सतत प्रक्रिया है जहां से अनुभूति का मार्ग प्रशस्त होता है।

**- सूर्यप्रताप शाही,** कैबिनेट कृषि मंत्री, उप्र

### समर्पण भाव से ही आगे बढ़ेंगे

ब्रह्माकुमारीज़ में दिए जा रहे ज्ञान को अनुकरण करने की आवश्यकता है। जब हम इस ज्ञान का अनुकरण करेंगे तो समाज आगे बढ़ेगा। जीवन तभी सफल होगा जब हम श्रद्धाभाव, समर्पण भाव से कार्य करेंगे। यहां 70 साल, 100 साल की माताएं-बहनें आज भी निस्वार्थ भाव से सेवा में लगी हैं। कुशीनगर क्षेत्र में ब्रह्माकुमारी मीरा दीदी के प्रयासों से लोगों को बड़े स्तर पर लाभ मिल रहा है। आज गांव के गांव इस अध्यात्म के ज्ञान से जुड़ रहे हैं। हमारी सरकार ने बेटियों की सुरक्षा के लिए कार्य किया है। **- राजेश्वर सिंह,** राज्यमंत्री बीज निगम अध्यक्ष, कुशीनगर, उप्र

### मेडिटेशन से सशक्त होगा मन

एक भारत-श्रेष्ठ भारत की संकल्पना ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से साकार हो रही है। यहां से लोगों को बदलाव का संदेश दिया जा रहा है। ये ब्रह्माकुमारी बहनें जाति-धर्म से परे लोगों को एकता, भाईचारा का संदेश दे रही हैं। यहां विश्व बंधुत्व की बात की जाती है। आज ऐसे प्रयासों की जरुरत है।

**- धर्मपाल सिंह,** पशुपालन डेयरी विकास मंत्री, उत्तर प्रदेश

### प्रकृति ने हमें सब कुछ दिया है

परमात्मा ने हमें श्रीमत दी है कि बच्चे सुबह अमृतवेला उठकर सबसे पहले मुझे याद करो। परमात्मा के निर्देशन में नई दुनिया की तैयारी चल रही है। राजयोग के दिव्य ज्ञान को धारण करने से जीवन महान बन जाएगा। वह दिन दूर नहीं जब इस धरा पर जल्द ही भारत भूमि पर स्वर्णिम दुनिया होगी, जहां सभी सुख-शांतिमय जीवन जीएंगे।

**- बीके निर्वैर भाई,** महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

### तीन बिंदू की गिफ्ट लेकर जाएं

हमारी पांच हजार वर्ष की यात्रा में स्वर्णिम युग से सृष्टि की शुरुआत होती है। जो त्रेतायुग, द्वापरयुग और अब कलियुग तक पहुंची है। अब फिर से हमें नई दुनिया में जाने के लिए श्रेष्ठ कर्म करना होंगे ताकि सतयुग में जाने के योग्य बन सकें। परमात्मा द्वारा दिए गए दिव्य ज्ञान को धारण कर हम स्वर्णिम दुनिया में जाने के योग्य बन सकेंगे। **- राजयोगिनी बीके जयंती दीदी,** अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका

### सदा प्रसन्नचित्त रहें, प्रश्नचित्त न रहें

ब्रह्माकुमारीज़ का मुख्य संदेश है- ईश्वर एक है, विश्व एक परिवार है। संस्था में प्रत्येक भाई-बहन खुद को निमित्त मानकर सेवा करते हैं। परमात्मा कहते हैं कुछ भी हो जाए खुशी, प्रसन्नता नहीं जाए। प्रसन्नचित्त रहें, प्रश्नचित्त न रहें। यहां से संकल्प लेकर जाएं कि सदा मैं संतुष्ट रहूंगा और अपने व्यवहार, कर्म से दूसरों को भी संतुष्ट करुंगा। **- राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी,** अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका

### संतुष्टता जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है-

परमात्मा इस धरा पर आकर ब्रह्मा तन का आधार लेकर गीता ज्ञान सुनाते हैं। परमात्मा कहते हैं कि जब-जब इस धरा पर धर्म की अतिग्लानि हो जाती है तब-तब मैं अवतरित होता हूं। वर्तमान में सृष्टि परिवर्तन का यह वही संधिकाल संगमयुग चल रहा है, जिसमें परमात्मा राजयोग के दिव्य ज्ञान से नए युग की आधारशिला रख रहे हैं। **- बीके बृजमोहन भाई,** अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

### परमात्मा ने दिया दिव्य ज्ञान

1937 में हम सभी को परमात्मा द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से दिव्य ज्ञान मिला। मात्र 87 वर्ष में यह ज्ञान माताओं-बहनों ने पूरे विश्व में पहुंचा दिया। आत्मा की शिक्षा ही यहां का मुख्य आधार है। ईश्वर हम सभी के माता-पिता हैं। इस विद्यालय की सफलता का राज सहज राजयोग मेडिटेशन है। लाखों लोगों का सुखमय, शांतिमय, आनंदमय जीवन इसका साक्षात् उदाहरण है।

**- बीके करुणा भाई,** मीडिया निदेशक, ब्रह्माकुमारीज़

### देश-विदेश से आए विद्वान

हर साल मुख्यालय शांतिवन में ग्लोबल समिट आयोजित की जाती है। इसका मकसद देश-विदेश की हस्तियों को एक मंच पर लाकर भारत की प्राचीन संस्कृति अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा, महत्व को दुनिया से रुबरु कराना। भारत के अलग-अलग राज्यों की लोककला, लोकनृत्य से आमजन को रुबरु कराना। समिट में आए सभी अतिथियों ने माना कि अध्यात्म के बिना विश्व शांति संभव नहीं है। **- डॉ. बीके मृत्युंजय भाई,** कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़

# सम्मान से बढ़ाया प्रतिभाओं का मान

## मीडिया, व्यापार और सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य पर तीन श्रेणियों में किया सम्मानित

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी तीन श्रेणियों में दिग्गज हस्तियों को सम्मानित किया गया। संस्थान की ओर से अलग-अलग क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर रहे लोगों को राष्ट्र चेतना पुरस्कार, मानव के संरक्षक पुरस्कार और ज्वेल ऑफ इंडिया पुरस्कार से शील्ड, प्रशस्ति पत्र और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

**ब्रह्माकुमारीज़ मानवता के संरक्षक पुरस्कार**

इस श्रेणी के तहत ऐसे लोगों को पुरस्कृत किया जाता है जो दुनिया में एकता, शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए कार्य कर रहे हैं। जिन्होंने क्षेत्रीय संघर्षों को रोकने में अपना सराहनीय योगदान दिया है।

**ब्रह्माकुमारीज़ राष्ट्र चेतना पुरस्कार**

पत्रकारिता के क्षेत्र में उच्च आदर्शों, देशप्रेम की भावना, समाज कल्याण, सत्य, साहस के साथ पत्रकारिता कर देशभर में नाम कमाने वाले वरिष्ठ पत्रकार को इस श्रेणी में पुरस्कृत किया जाता है।

**ब्रह्माकुमारीज़ ज्वैल ऑफ इंडिया अवार्ड**

अपनी लगन और हिम्मत से उद्योग के क्षेत्र में नवाचार कर देश-दुनिया में नाम रोशन करने वाले व्यापारियों, उद्यमियों को इस श्रेणी के तहत पुरस्कृत किया गया। इसका मकसद उद्यमिता के प्रति बढ़ावा देना है।

### मानव कल्याण के लिए कार्य पर सम्मान

पुणे के एमआईटी-डब्ल्यूपीयू ग्रुप के संस्थापक प्रो. डॉ. विश्वनाथ डी. करद को उनके द्वारा समाज में मानवता के कल्याण के लिए किए गए कार्य के लिए मानवता के संरक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### इस कार्य को और तेज करने की जरूरत है

नई दिल्ली के न्यूज इंडिया राष्ट्रीय चैनल के वॉइस प्रेसिडेंट सरफराज सैफी को राष्ट्रीय चेतना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सैफी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जो कार्य किया जा रहा है उसे और तेज करने की जरुरत है।

### मेडिटेशन की आज प्रत्येक व्यक्ति को जरूरत है

हैदराबाद के एनएसएल ग्रुप ऑफ कंपनीज के चैयरमैन एम. प्रभाकर राव को उद्योग जगत में नए कीर्तिमान स्थापित करने पर ज्वेल ऑफ इंडिया पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राव ने कहा मेडिटेशन की आज प्रत्येक व्यक्ति को जरुरत है।

### राजयोग की शिक्षा से लोगों की सोच बदली है

स्वच्छ भारत मिशन राजस्थान के ब्रांड एंबेसेडर श्याम प्रताप राठौर को ग्राम विकास के लिए कार्य करने पर मानवता के संरक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राठौर ने कहा कि गांव में राजयोग की शिक्षा से लोगों की सोच बदली है।

### ज्ञान वही दिव्य है जो हर युग में शाश्वत हो

रायपुर के हरिभूमि के समूह संपादक हिमांशु द्विवेदी को पत्रकारिता में उनके सराहनीय योगदान के लिए राष्ट्र चेतना पुरस्कार से नवाजा गया। उन्होंने कहा कोई भी युग हो ज्ञान वही दिव्य है जो हर युग में शाश्वत हो, सत्य हो और सदा बना रहे।

### साइंटिस्ट डॉ. एम. मणिकवसागम सम्मानित

डीआरडीओ के सिस्टम एनालिसिस एवं स्पिक के निदेशक और आउटस्टैंडिंग साइंटिस्ट डॉ. एम. मणिकवसागम फिए को साइंस के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### गौ माता की सुरक्षा करने की जरूरत है

गुजरात के बंशी गीर गौ शाला के संस्थापक गोपाल भाई सुतारिया को मानवता के संरक्षक पुरस्कार से नवाजा गया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ मानवता के कल्याण के लिए कार्य कर रही है। गौ माता की सुरक्षा और संरक्षण करने की जरुरत है।

### वसुधैव कुटुम्बकम का कार्य कर रही है संस्था

दिल्ली अमर उजाला के डिजिटल के संपादक जयदीप कार्निक को पत्रकारिता में तीन दशक से मूल्यों को बढ़ावा देने पर राष्ट्र चेतना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा ब्रह्माकुमारीज़ वसुधैव कुटुम्बकम का कार्य कर रही है।

### नारी शक्ति ही विश्व का उद्धार कर सकती है

हैदराबाद के जीवीपीआर इंजीनियर्स लिमिटेड के चेयरमैन जीएसपी वीरा रेड्डी को उद्योग के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि नारी शक्ति ही विश्व का उद्धार कर सकती है।

## कलाकारों ने दिखाई भारतीय संस्कृति की

# स्वर्णिम आभा

### वैश्विक शिखर सम्मेलन

**सांस्कृतिक कार्यक्रम में मिर्जापुर और हैदराबाद से आए कलाकारों ने प्रस्तुतियों से किया मंत्रमुग्ध**

**आबू रोड (राजस्थान)।** मुख्यालय शांतिवन में आयोजित चार दिवसीय वैश्विक शिखर सम्मेलन में हैदराबाद और मिर्जापुर से आए डिवाइन ग्रुप के कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। गणेश वंदना से लेकर शिव तांडव और दुर्गा प्रस्तुति में कलाकारों ने अपने हुनर से सभी को चकित कर दिया।

## संपादकीय

# आत्म दीप जगाकर परमात्म प्रेम कि लगन को बढ़ाएं

*दिवाली में हम सभी दीया जलाकर, पूजा-पाठ तो करते ही हैं। पर इस दिवाली हम सभी अपने अन्दर आत्म दीप जगाकर सभी को सूर्य की तरह रोशनी दे सकते हैं ताकि विश्व की सर्व आत्माएं अपने परमपिता परमात्मा से बिछड़े हुए स्वयं को जान और परमात्मा पिता को पहचान कर उससे मिलन मनाने के लिए अरावली पर्वत की महान देव भूमि माउंट आबू आ कर अपने जनम-जनम की परमात्म प्रेम की प्यास बुझा सकें। इसके लिए हमें सभी मनुष्य आत्माओं को शुभ भावनाओं और शुभकामनाओं के साथ सदा समर्थ संकल्प धारण करना होगा। अपने अंदर की परमात्म प्रेम की लगन और ज्वाला को नित बढ़ाते जाएं। ताकि इस ज्वालाग्नि से विश्व की सर्व आत्माओं को रास्ता मिल सके और वे सहज ही ज्ञान सूर्य परमात्मा से मिल सके। इस मिलन मेला से हमारे अंदर सदा ही शांति और प्रेम का दीया जलता रहेगा। जिससे हमें अहसास होगा की हमारी तो रोज ही दिवाली है। इस दीवाली संकल्प करें कि अपने मन में जो नकारात्मक बुराई रूपी अंधकार है उसे सदा-सदा के लिए विदाई देकर सदा-सदा के लिए अच्छाई रूपी नेक कर्म, सोच को स्वीकार करेंगे। सदा खुश रहेंगे और दूसरों को खुशियां बांटेंगे। इसलिए हमारे दिल से निकलता है जगमग-जगमग आत्म दीप जले, घर के आँगन में फूल खिले, दिल मिले, सुर सजे, संगीत बजे, मन मंदिर में परमात्मा राम बसें, बस यूं ही दिवाली सेलिब्रेट करें। तो आप सबको खुशियां खूब मिले।*

## बोध कथा/जीवन की सीख

# हर बुराई में अच्छाई खोज सकते हैं

एक शिष्य अपने गुरु से सप्ताह भर की छुट्टी लेकर अपने गांव जा रहा था। तब गांव पैदल ही जाना पड़ता था। जाते समय रास्ते में उसे एक कुआं दिखाई दिया। शिष्य प्यासा था, इसलिए उसने कुएं से पानी निकाला और अपना गला तर किया। शिष्य को अद्भुत तृप्ति मिली,

क्योंकि कुएं का जल बेहद मीठा और ठंडा था। शिष्य ने सोचा – क्यों ना यहां का जल गुरुजी के लिए भी ले चलूं। उसने अपनी मशक भरी और वापस आश्रम की ओर चल पड़ा। वह आश्रम पहुंचा और गुरुजी को सारी बात बताई। गुरुजी ने शिष्य से मशक लेकर जल पिया और संतुष्टि महसूस की। उन्होंने शिष्य से कहा- वाकई जल तो गंगाजल के समान है। शिष्य को खुशी हुई। गुरुजी से इस तरह की प्रशंसा सुनकर शिष्य आज्ञा लेकर अपने गांव चला गया। कुछ ही देर में आश्रम में रहने वाला एक दूसरा शिष्य गुरुजी के पास पहुंचा और उसने भी वह जल पीने की इच्छा जताई। गुरुजी ने मशक शिष्य को दी। शिष्य ने जैसे ही घूंट भरा, उसने पानी बाहर कुल्ला कर दिया।

शिष्य बोला- गुरुजी इस पानी में तो कड़वापन है और न ही यह जल शीतल है। आपने बेकार ही उस शिष्य की इतनी प्रशंसा की। गुरुजी बोले- बेटा, मिठास और शीतलता इस जल में नहीं है तो क्या हुआ। इसे लाने वाले के मन में तो है। जब उस शिष्य ने जल पिया होगा तो उसके मन में मेरे लिए प्रेम उमड़ा। यही बात महत्वपूर्ण है। मुझे भी इस मशक का जल तुम्हारी तरह ठीक नहीं लगा। पर मैं यह कहकर उसका मन दुखी करना नहीं चाहता था। हो सकता है जब जल मशक में भरा गया, तब वह शीतल हो और मशक के साफ न होने पर यहां तक आते-आते यह जल वैसा नहीं रहा, पर इससे लाने वाले के मन का प्रेम तो कम नहीं होता है ना।

**संदेश**: दूसरों के मन को दुखी करने वाली बातों को टाला जा सकता है और हर बुराई में अच्छाई खोजी जा सकती है। जब हम बुराई में भी अच्छाई खोजने लगते हैं तो हमारा नजरिया और दृष्टिकोण चीजों और जीवन के प्रति सकारात्मक हो जाता है। मन शक्तिशाली हो जाता है। जीवन में आने वाली कठिन से कठिन परिस्थिति आसान हो जाती है। जीवन में आनंद ही आनंद हो जाता है।

## मेरी कलम से

**बाबूभाई,** उपाध्यक्ष, कच्छ-भुज क्षत्रिय महासभा, भुज, गुजरात

# परमात्म शक्ति की बदौलत जीवन में राह के शूल, फूल के समान बन गए

## राजयोग ज्ञान से विकट परिस्थितियों पर पाई विजय

**शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।**

आज से करीब 20 साल पहले जब मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा तो लोगों ने बहुत विरोध किया। तरह-तरह से मुझे परेशान किया गया। मेरा कारोबार करना कठिन हो गया था। जीवन में कई परेशानियां आईं। लोगों का ब्रह्माकुमारीज़ के प्रति सही नजरिया नहीं होने और भ्रांतियां होने से विरोध करते थे। लेकिन राजयोग मेडिटेशन अपनाने के बाद मेरा जीवन बदल गया। जीवन में अनेक परिस्थितियां आईं लेकिन परमात्मा का कमाल है कि राह के शूल, फूल के समान बन गए। परमात्म शक्ति की बदौलत कभी भी मन को कमजोर नहीं होने दिया।

इस दौरान कई बार कारोबार में उतार-चढ़ाव आया लेकिन परमात्मा के आर्शीवाद से आज सब बढ़िया चल रहा है। मेरे जीवन का अनुभव है कि ब्रह्माकुमारीज़ में दिए जा रहे आत्मा-परमात्मा के ज्ञान से बढ़कर कुछ हो नहीं सकता है। यह ज्ञान सबसे ऊंच और महान है। यहां अंधविश्वास की कोई बात नहीं है। इस ज्ञान को जीवन में अपनाने के बाद आपका सोचने का नजरिया बदल जाता है। जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल जाता है। आपकी सोच महान हो जाती है। जीवन में आने वाली परेशानियों में मन अशांत नहीं होता है। जीवन में सुख-शांतिमय, आनंदमय बन जाता है। राजयोग मेडिटेशन से हमारे माइंड की पावर बढ़ जाती है। लोगों के प्रति हमारा नजरिया भाईचारे का हो जाता है। मेरा सभी भाई-बहनों से अनुरोध है कि जीवन में कम से कम एक बार इस ज्ञान को समझने का प्रयास जरूर करना चाहिए। अपने नजदीकी सेवाकेंद्र पर जाकर सात दिन का राजयोग कोर्स जरूर सीखना चाहिए। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि आपका जीवन पहले ही दिन से बदलने लगेगा। आप खुद में बदलाव महसूस करेंगे।

# आत्मिक पुरुषार्थ द्वारा परिवर्तन से अलौकिक परिणाम

## जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 64

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

**आबू रोड (राजस्थान)।**

अध्यात्म से सम्बद्ध तीव्र पुरुषार्थ जीवन के परिमार्जन हेतु आवश्यक कारक होता है जिसमें राजयोग का सानिध्य सहजता से आत्मा की धरोहर बन जाता है और चेतना की अन्तर्मुखी अवस्था से गहन मौन की ओर गतिशीलता सुनिश्चित हो जाती है। जीवन में बाह्य जगत से अंतर्जगत की यात्रा का रुपांतरण अलौकिक परिणाम की उत्पत्ति का आधार बनकर परिमार्जित अन्त:करण से अनहद नाद के उच्चतम परिदृश्य में निराकार स्वरुप की उपलब्धि का अधिकारी बन जाता है।

**परिवर्तन की अंतर्दृष्टि का अनुकरण :** जीवन में आत्म ज्ञान की बोधगम्यता और धर्म - कर्म के व्यावहारिक स्वरुप में कुशलता हेतु योग द्वारा सत्कर्म की सुनिश्चितता आत्म परिष्कार का आधारभूत पक्ष होता है । आत्मिक सजगता से ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों की प्रायोगिक उपयोगिता आत्म कल्याण से सम्बंधित अवस्था में परिवर्तित हो जाती है जो आत्मगत धारणा के निरंतर अनुसरण और सेवा के परोपकारी भाव जगत से सदा सम्बद्ध रहती है । स्व परिवर्तन की अंतर्दृष्टि का सदा अनुकरण करते हुए सर्व आत्माओं के प्रति क्षमा के साथ कल्याणकारी दृष्टिकोण को विकसित करने का पुरुषार्थ करना आत्मिक समृद्धि के मंगलकारी परिणाम का द्योतक है । अलौकिक जीवन की उद्घोषणा विराट आत्मिक उत्कर्ष के पुन: जागरण का काल है जो परिवर्तन की अंतर्दृष्टि के गहनतम परिदृश्य को श्रद्धा के साथ आत्मसात करने हेतु सतत रुप से चेतना को अभिप्रेरणा प्रदान करता रहता है । सम्पूर्ण आत्म परिष्कार की प्रक्रिया में - ज्ञान , योग , धारणा , सेवा एवं क्षमा से अभिवृद्धि को प्राप्त होने वाली आत्मिक समृद्धि , युगांतकारी परिवर्तन द्वारा आत्मिक रुपांतरण की सुखद परिणिति है ।

**आत्मिक पुरुषार्थ के व्यावहारिक परिणाम :**
मानवीय चेतना की पृष्ठभूमि में आत्मिक पुरुषार्थ की उपादेयता का स्वरुप समग्र चिंतनशील मन:स्थिति के अंतर्गत चित्त की एकाग्रता से सम्बद्ध होता है जिसमें सत्य दर्शन की अनुभूति और जीवन की विराटता का दिग्दर्शन समाहित रहता है । आत्मानुभूति की अभिलाषा व्यक्तिगत जीवन में आध्यात्मिकता के अनुकरण का प्रमुख कारण है जो आत्मिक परिष्कार के व्यावहारिक संस्करण के रुप में आत्म एवं परमात्म दर्शन की सहजता को अभिव्यक्त कर देती है । जीवात्मा की अवस्था जब महामानव के समदृश्य प्रकट होती है तब - व्यक्तित्व , कृतित्व एवं अस्तित्व के अंतर्गत श्रेष्ठतम व्यवहार दर्शन की अपेक्षा के सानिध्य में आत्मगत उच्चता का दार्शनिक स्वरुप सर्व आत्माओं के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

आत्महित का श्रेष्ठ संकल्प आत्मिक पुरुषार्थ हेतु अनिवार्य तत्व है जिसमें आत्म परिष्कार का श्रेष्ठ विकल्प सदा विद्यमान रहते हुए व्यावहारिक जीवन में उच्चतम परिणाम का संवाहक बन जाता है । उन्नति की उन्मुक्त अवधारणा की यथार्थता को वास्तविक आत्म अस्तित्व के बोध और निमित्त स्वरुप की स्मृति से जीवन की सत्यता के सानिध्य में आत्म एवं परमात्म दर्शन की सर्वोच्चता द्वारा व्यवहार में अनुभव किया जा सकता है ।

### परिमार्जन की उपलब्धि से निर्णयन

जीवन दृष्टि की प्राप्ति मानवता के लिए उच्चता से सराबोर श्रेष्ठतम स्थिति है जो सृजनात्मक दृष्टिकोण के पक्ष को दिव्यता की शक्ति द्वारा सम्पूर्ण समर्पण से सर्वगुण सम्पन्नता के सर्वोच्च स्वरुप में स्थापित करते हुए वास्तविक धर्म एवं कर्म के मार्ग को प्रशस्त कर देती है । अध्यात्म से सम्बद्ध तीव्र पुरुषार्थ जीवन के परिमार्जन हेतु आवश्यक कारक होता है जिसमें राजयोग का सानिध्य सहजता से आत्मा की धरोहर बन जाता है और चेतना की अन्तर्मुखी अवस्था से गहन मौन की ओर गतिशीलता सुनिश्चित हो जाती है । जीवन में बाह्य जगत से अंतर्जगत की यात्रा का रुपांतरण अलौकिक परिणाम की उत्पत्ति का आधार बनकर परिमार्जित अन्त:करण से अनहद नाद के उच्चतम परिदृश्य में निराकार स्वरुप की उपलब्धि का अधिकारी बन जाता है ।

**सम्पूर्णता के परिवेश में परिमार्जित मन:** स्थिति को आत्मसात करके जब व्यक्तित्व की गरिमा , धर्मगत आचरण से आध्यात्मिक अनुग्रह तक पहुंचती है तब चेतना पूर्णतया मौन की नैसर्गिक प्रक्रिया द्वारा परमात्म अनुभूति के आनंद में अभिभूत हो जाती है । आत्म परिष्कार की साधना में आत्मिक परिवर्तन के व्यावहारिक परिणाम की पवित्रतम आत्मानुभूति सुनिश्चित स्वरुप में परिमार्जन की उच्चता से चेतना को श्रृंगारित करके निराकारी स्वरुप में परिवर्तित कर देने में पूर्णत: समर्थ होती है ।

धन-धान्य से परिपूर्ण राज्यों के राजाओं की तुलना उस एक चींटी से नहीं की जा सकती है जिसका हृदय ईश्वर भक्ति से भरा हो।

**- गुरुनानक देव जी**

अपने मन, वचन तथा कर्म से हिंसा नहीं करनी चाहिए। अहिंसा ही परम ब्रह्म है, अहिंसा ही सुख-शांति देने वाली है।

**- महावीर स्वामी जी**

## 48वीं माइंड-बॉडी-मेडिसिन नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित

# इमोशनल हीलिंग मरीज के लिए है वरदान

आबू रोड (राजस्थान)।

ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय शांतिवन परिसर में चार दिवसीय मेडिकल विंग की 48वीं माइंड-बॉडी-मेडिसिन नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। शुभारंभ शुभारंभ मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, महासचिव राजयोगी बीके निर्वैर भाई व अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्जवलन कर किया। इसमें देश-विदेश के एक हजार से अधिक डॉक्टर्स ने भाग लिया। इसमें सभी ने माना कि डॉक्टर की इमोशनल हीलिंग मरीज के लिए वरदान साबित होती है।

### मेरी तरक्की में ब्रह्माकुमारी का योगदान

नई दिल्ली एम्स में एनेस्थिसिया डिपार्टमेंट की पूर्व एचओडी डॉ. ऊषा किरण ने कहा कि मैंने अपनी निजी जिंदगी और प्रोफेशनल जीवन में जो तरक्की की है उसके पीछे ब्रह्माकुमारीज़ का सबसे बड़ा योगदान है। यहां से ज्ञान लेने के बाद मेरा जीवन बदल गया। ये ब्रह्माकुमारी बहनें साक्षात् में देवियां हैं। इनका पवित्र, त्यागी-तपस्वी जीवन प्रेरणास्रोत है। यहां पवित्र भाई-बहनें सेवाभाव से यहां भोजन बना रहे हैं यह सीखने लायक है। जीवन मिला है तो इसे सेवाभाव में जरूर लगाएं। यदि जीवन में देने का भाव है तो परमात्मा हमें हजार गुना देता है। मेडिटेशन को आप सभी भी अपने जीवन में अपनाकर इसके चमत्कार देखें।

### अपना व्यवहार प्रेमपूर्ण बनाएं

ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा ने कहा कि मेडिकल क्षेत्र में सबसे ज्यादा हमें अपना व्यवहार प्रेमपूर्ण बनाना होगा। प्रेम अपने आप में एक शक्ति है। आपका प्रेमपूर्ण व्यवहार मरीजों के लिए वरदान साबित होता है। आज मेडिकल क्षेत्र में मूल्यों की बहुत जरूरत है ताकि समाज का विश्वास बना रहे। हैप्पीनेस विषय पर डॉ. प्रेममसंद भाई ने कहा कि अपने आपसे कहें कि ऑल इज वेल। जब हम सदा अपना पद, पैसा, प्रतिष्ठा को ध्यान में रखकर काम करते हैं तो खुशी गायब हो जाती है और तनाव होता है। जब आप घर जाएं तो डॉक्टर बनकर नहीं एक पिता, पति, बच्चे बनकर जाएं। क्योंकि परिवार के लिए आप एक सदस्य हैं। जब हमारा चीजों के प्रति साक्षी भाव होता है तो निर्लिप्त अवस्था रहती है।

### जब विवेक के आधार पर कर्म करते हैं तो खुशी मिलती है-

आर्ट ऑफ हैपी लिविंग विषय पर लंदन से आईं मोटिवेशनल स्पीकर बीके गोपी दीदी ने कहा कि खुशी हमारी मन की अवस्था है। ऐसी स्थिति बनाएं कि व्यक्ति है नहीं है, साधन है या नहीं है लेकिन खुशी न जाए। जब हम विवेक के आधार पर कर्म करते हैं तो खुशी मिलती है। विवेक को अपना दोस्त बना लें। जब विवेक की जागृति होती है तो खुशी के लिए निर्णय लेना आसान हो जाता है। जिसके जीवन में सत्यता है वह सदा अंदर से खुशी में नाचता रहेगा। जो लोग लोकलाज के कारण अंदर की आवाज को दबा देते हैं तो उनके जीवन में खुशी भी दूर हो जाती है। एक है खुद से खुश रहना, दूसरा है संबंध-संपर्क में खुश रहना और तीसरा है कामकाज से खुश रहना। जिसके जीवन में यह तीन प्रकार की खुशी रहती है तो जीवन एक कला बन जाता है।

### अपना जीवन मूल्यवान बनाएं

कार्यकारी सचिव डॉ. बीके बनारसी लाल ने कहा कि इस शिक्षा को जीवन में धारण कर ऐसा बना लें कि लोग कहें कि ये डॉक्टर नहीं भगवान हैं। अपने जीवन को इतना मूल्यवान, गुणवान बना लें कि जो भी आपको देखे वह कहे वाह इनमें इतना परिवर्तन कहां से आया है। डॉ. शिल्पी रावल, नेपाल के हेल्थ साइंसेस हॉस्पिटल के डॉ. विकास, आंध्रप्रदेश के एचआरडी कमेटी चेयरमैन सत्यनारायण राजू ने भी संबोधित किया।

### अध्यात्म में सब समस्याओं का है समाधान

अलग-अलग सत्रों में महासचिव राजयोगी बीके निर्वैर भाई, मीडिया निदेशक बीके करुणा भाई, ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका डॉ. सविता दीदी, मोटिवेशनल स्पीकर प्रो. स्वामीनाथन, डॉ. सचिन परब, डॉ. सतीश गुप्ता, डॉ. प्रियंका बहन, वरिष्ठ नर्स बीके रुपा, ग्वालियर के नवजीवन हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. बृजेश सिंघल, बीके श्रीनिधि भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

# यदि श्रेष्ठ-पॉजीटिव संकल्प करेंगे तो ही श्रेष्ठ बनेंगे: बीके शिवानी दीदी

मेडिकल कॉन्फ्रेंस में अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने कहा कि सभी डॉक्टर्स आज से खुद को मानकर चलें कि मैं फरिश्ता हूं, एंजिल हूं। फरिश्तों को कभी टेंशन या तनाव नहीं होता है। हम जैसा सोचते हैं, वैसा बन जाते हैं। संकल्प से सृष्टि बनती है। इसलिए अपनी दिनचर्या से नकारात्मक शब्दों को हटा दें। जब तक हम अच्छा बनने, श्रेष्ठ बनने के बारे में सोचेंगे नहीं, संकल्प नहीं करेंगे, अच्छा सुनेंगे-पढ़ेंगे नहीं तो फिर अच्छा कैसे बनेंगे। श्रेष्ठ-पॉजीटिव संकल्प करेंगे तो ही श्रेष्ठ बनेंगे। प्रत्येक कर्म की शुरुआत संकल्प से होती है। आपका माइंड जितना पावरफुल, स्ट्रांग और पॉजीटिव एनर्जी से भरपूर रहेगा तो आपके संपर्क में आने वाले मरीजों को भी पॉजीटिव बाइब्रेशन फील होंगे।

### कर्मों को बड़ी सावधानी से करें-

आज हमारा जो जीवन है उसमें हमारे आत्मा के पूर्व जन्मों के संस्कार का बड़ा रोल होता है। घर में जो बच्चा बनकर आता है वह आत्मा पिछले जन्म से जो लेकर आया है उस अनुसार इस जन्म में उसका रोल होता है। चिंता, दुख, दर्द की एनर्जी में जो कर्म करते हैं तो वह नकारात्मक कर्मों की श्रेणी में जाते हैं। इसलिए संकल्प से लेकर कर्मों को बड़ी सावधानी से करना चाहिए। कर्म का फल मिलना निश्चित है।

### रोज करें ये सात संकल्प-

शिवानी दीदी ने सभी को संकल्प कराया कि आज से रोज

सुबह, शाम और बीच-बीच में दिन में संकल्प करें कि मैं शांत स्वरूप आत्मा हूं, मैं ज्ञान स्वरूप आत्मा हूं, मैं प्रेम स्वरूप आत्मा हूं, मैं सुख स्वरूप आत्मा हूं, मैं शक्ति स्वरूप आत्मा हूं, मैं पवित्र स्वरूप आत्मा हूं, मैं आनंद स्वरूप आत्मा हूं... जब इन संकल्पों को रोज मन में बार-बार दोहराएंगे तो आत्मा के मूल संस्कार जागृत होने लगेंगे। आत्मा की पावर बढ़ने लगेगी। माइंड स्ट्रांग होने लगेगा।

### मरीज के लिए बोले गए मोटिवेशनल शब्द मिरेकल्स हीलिंग का काम करते हैं

मिरेकल्स इन हीलिंग विषय पर शिवानी दीदी ने कहा कि डॉक्टर्स का मरीजों के साथ किया गया स्नेहपूर्ण व्यवहार उन्हें दवा से भी ज्यादा असर करता है। क्योंकि आज ज्यादातर बीमारियों का कारण रिश्तों में प्यार-स्नेह की कमी, अपनेपन की कमी, दुख, दर्द और चिंता है। डॉक्टर द्वारा मरीज के लिए बोले गए मोटिवेशनल शब्द उसे जल्द ठीक होने में मिरेकल्स हीलिंग का काम करते हैं। इसलिए आप सभी की जिम्मेदारी है कि मरीजों से मिलते समय बहुत ही प्यार, खुशी और दयाभाव के साथ इलाज करें। क्योंकि मरीज पहले से ही शरीर और मन से बीमार है। ऐसे में आपका व्यवहार उसके मन पर छाप छोड़ देता है। सतयुग में सभी दिव्य आत्माएं थीं। सर्वगुण संपन्न, सतोप्रधान अर्थात देवताई गुण थे। फिर त्रेतायुग में आने पर दो कलाएं कम हो गईं। द्वापरयुग में और कलाएं कम होने से मैं आत्मा मांगने वाली बन गई। कलियुग में पांच विकारों के वशीभूत होकर आत्मा खुद को मारने वाली बन गई। खुद को तनाव, चिंता से मार रहे हैं। परिणामस्वरूप आत्मा अपने मूल देवताई गुणों, शक्तियों, विशेषताओं को भूल गई है। अब फिर हमें आत्मा के सात दिव्य गुण- ज्ञान, शांति, प्रेम, पवित्रता, सुख, शक्ति और आनंद को जागृत करना है। खुद को आत्मा समझकर परमात्मा को याद करते हैं तो आत्मा की बैटरी चार्ज होने लगती है, पावर बढ़ जाती है।

### शिवानी दीदी ने ये मंत्र बताए

- अपनी व्यस्त दिनचर्या में से एक घंटा अपने लिए जरूर निकालें। मेडिटेशन करें। अपनी कमजोरी और ताकत को पहचानकर उसे लिखें। कमजोरी को दूर करने की कोशिश करें।
- व्रत अर्थात हमें रोज एक संकल्प लेना है कि आज हम इस बुरे विचार का व्रत करेंगे। आज एक अच्छे विचार के साथ पूरा दिन बिताएंगे।
- त्योहार हमें जीवन में सात्विकता अपनाने, कुछ अच्छा अपनाने और बुरी चीजों को छोड़ने की शिक्षा देते हैं।
- तीन महीने खुद पर प्रयोग करके देखें कि अन्न का मेरे मन पर क्या असर पड़ता है। तीन माह के लिए नॉनवेज छोड़कर खुद पर प्रयोग करें।
- दुआ, दवा से भी ज्यादा काम करती है। आपके पेशे में सबसे ज्यादा दुआ कमा सकते हैं तो इसके उलटा भी कमा सकते हैं।

# आध्यात्मिकता के समावेश और मूल्यनिष्ठ समाजसेवा से होगी समृद्ध समाज की स्थापना

**समाज सेवा प्रभाग का चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित**

मूल्य आधारित सेवा द्वारा समृद्ध समाज की पुनर्स्थापना विषय पर आयोजन

आबू रोड (राजस्थान)।

ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय शांतिवन में चार दिवसीय समाजसेवा प्रभाग का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर से पांच हजार से अधिक समाजसेवियों और समाजसेवा के क्षेत्र से जुड़े संगठन पदाधिकारियों, रोटरी क्लब सदस्य, एनजीओ के संचालकों ने भाग लिया। मूल्य आधारित सेवा द्वारा समृद्ध समाज की पुनर्स्थापना विषय पर आयोजित सम्मेलन में छह सत्रों में विद्वान वक्ताओं ने चिंतन-मंथन कर निष्कर्ष निकाला कि जब समाजसेवा निमित्त मानकर, उपराम भाव से, परमात्मा को अर्पण कर और आध्यात्मिकता के समावेश से मूल्यों के आधार पर करेंगे तो समृद्ध समाज की स्थापना होगी।

### यहां चरित्र निर्माण किया जा रहा है

उत्तराखंड भगवानपुर विधायक ममता राकेश ने कहा कि यहां आकर खुद को भाग्यशाली महसूस कर रही हूं। ब्रह्माकुमारीज़ में चरित्र निर्माण की शिक्षा दी जा रही है जिसकी आज समाज में बहुत जरूरत है। ब्रह्मा बाबा ने जिस उद्देश्य के साथ इस संगठन की नींव रखी थी आज ब्रह्माकुमारी बहनें उस पावन उद्देश्य में सेवा में समर्पित रूप से जुटीं हैं। आज ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान की बहुत आवश्यकता है। इंसान को देवता बनाने के लिए चरित्र निर्माण का पाठ ये बहनें पढ़ा रहीं हैं।

### संतुष्टता से आती है सुख-शांति-

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका और समाजसेवा प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी संतोष दीदी ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन और अध्यात्म को जीवन में शामिल करने से सुख-शांति और संतुष्टता आती है। यदि जीवन में सबकुछ है और संतुष्टता नहीं है तो सुखी नहीं रह सकते हैं। संतुष्टता सर्वगुणों की जननी है। जीवन में प्रसन्नता आ जाती है। मनुष्य जीवन हीरे जैसा है, इसे सफल करना है। मनुष्य जीवन सर्वश्रेष्ठ जीवन है और परमात्मा का शुक्रिया अदा करते रहें तो जीवन आनंदित हो जाता है।

### स्वयं में दिव्यता को जागृत करें-

उत्तराखंड के बद्रीनाथ से विधायिक ब्रिज लता ने कहा कि यहां की सभी गतिविधियां अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न हो रही हैं। सेवा दो तरह की है निष्काम व सकाम सेवा। निष्काम सेवा केवल मन की खुशी के लिए की जाती है। कुरूक्षेत्र के राष्ट्रीय स्वयं सेवक के अध्यक्ष सुधीर कुमार ने कहा कि मनुष्य की क्षमताएं प्रकृति की सीमाओं भी परे हैं। मनुष्य उन क्षमताओं का उपयोग करके अपना सर्वश्रेष्ठ निर्माण कर सकता है।

### इन्होंने भी रखे अपने विचार-

उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी नपा अध्यक्ष रमेश सामवाल, प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक बीके अवतार भाई, प्रो. दिनेश चहल, बीके प्रेम दीदी, बीके राधा दीदी, बीके मेहरचन्द भाई, बीके आशा दीदी, बीके विजया दीदी, बीके पद्मा दीदी, बीके सन्तोष दीदी, बीके तारा दीदी, इंदौर से बीके राकेश बामोरिया, बीके सरिता दीदी, बीके सुनील, बीके मीना बहन, बीके वंदना दीदी, मुख्यालय संयोजक बीके बीरेंद्र भाई ने भी अपने विचार रखे।

## दूसरों के लिए जीना ही जीना है : डॉ. अंजू बाला

नई दिल्ली की अनुसूचित जाति राष्ट्रीय आयोग की सदस्य डॉ. अंजू बाला ने कहा कि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। इस पावन भूमि पर हम सत्य की खोज करने आए हैं। ब्रह्माकुमारीज़ में आकर अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा लेकर मेरे विचारों में सकारात्मकता बढ़ गई। पहले की

अपेक्षा गुस्सा शांत हो गया। जब से सुबह मेडिटेशन करना शुरू किया है तो मन में असीम शांति की अनुभूति होती है। वाणी महाभारत करा देती है और यही वाणी मधुर संगीत बन जाती है। देश-विदेश में ब्रह्माकुमारीज़ संगठन एक मिसाल है कि इसकी बागडोर हमारी बेटियों ने ही संभाली है। कौन कहता है कि बेटियां नाम रोशन नहीं करती हैं ब्रह्माकुमारियां इसका साक्षात् उदाहरण है कि बेटियां जब कदम बढ़ाती हैं तो अपने साथ परिवार और देश का नाम रोशन करती हैं। दूसरों के लिए जीना ही जीना है। समाजसेवा का क्षेत्र भी दूसरों के लिए होता है। दूसरों के लिए जीना ही सही मायने में जीवन जीना है।

## हम लोग सनातन को भूल रहे हैं, यह हमारी सबसे बड़ी भूल है: एक्टर रॉकसन वाटकर

मुंबई के प्रोड्यूसर और हॉलीवुड-बॉलीवुड एक्टर रॉकसन वाटकर ने कहा कि मेरा नौ साल से शरीर में खून नहीं बन रहा है, डॉक्टरों ने कहा था कि आप छह माह ही जीवित रहेंगे, फिर भी मैं आज जिंदा खड़ा हूं तो उसका कारण है अध्यात्म। मुझे नहीं पता कि जीवन का कौन सा पल मेरा अंतिम क्षण हो। मैं हर पल मौत को सामने देख रहा हूं। यदि मालिक मुझे जिंदा रख रहा है तो इसका मतलब है कि वह मुझसे कुछ अच्छा कराना चाहता है। जब सारे रास्ते बंद हो जाते हैं तब अध्यात्म का रास्ता हमेशा खुला रहता है। हम लोग सनातन को भूल रहे हैं, यह हमारी सबसे बड़ी भूल है। कुछ लोग हिंदुस्तान के कल्चर को खत्म करने की सोच रहे हैं। लेकिन मुझे आश्चर्य हो रहा है कि बॉलीवुड के लोग चुप क्यों हैं। सोच बदलो, दुनिया बदल जाएगी। विचारों को बदलो, सब बदल जाएगा। मुझे मानव जीवन मिला है तो मैं देश, समाज के लिए कुछ अच्छा करुं।

यही जीवन का मकसद है। मैंने कभी भी गुटखा, तंबाकू, वाइन का विज्ञापन नहीं किया है और न ही करुंगा। मेरा मकसद है भारत की आध्यात्मिक शक्ति को सबके सामने रुबरु कराना। मेरा मकसद पैसा कमाना नहीं है। मैं सनातन संस्कृति से विश्व को रुबरु कराना चाहता हूं। ब्रह्माकुमारीज़ में साक्षात् में स्वर्ग देखा। मैंने यहां सीखा है कि आप शिकायत न करें, प्रशंसा करें। शिकायतें कभी खत्म होने वाली नहीं हैं। यदि हम प्रसन्न रहेंगे, खुश रहेंगे तो हमें देखकर दूसरे भी खुश रहेंगे। प्रभाग के उपाध्यक्ष गुलबर्गा के प्रेम भाई, दिल्ली की कार्यकारी सदस्य बीके विजया दीदी, भोपाल जोन की जोनल संयोजिका बीके शैलजा दीदी, गुलबर्गा कर्नाटक उप क्षेत्र की अध्यक्षा बीके विजया दीदी, अजमेर सबजोन की प्रभारी एवं राजस्थान जोन संयोजिका बीके शान्ता दीदी, महाराष्ट्र अमरावती की प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका बीके सीता दीदी ने भी संबोधित किया।

### समाजसेवा अर्थात् दिव्य धन को बढ़ाना

मुंबई केरला जोन के क्षेत्रीय संयोजक व प्रेरक वक्ता प्रो. ईवी स्वामीनाथन भाई ने कहा कि समाजसेवी में तीन विशेषता- उमंग-उत्साह, सन्तुष्टता और अच्छा स्वास्थ्य अच्छा। समाजसेवा का अर्थ है अपने दिव्य धन को बढ़ाना। समाज सेवक रोटी, कपड़ा और मकान देता है। आपदा आने पर अन्दर का देवत्व स्वतः ही जागृत हो जाता है। यही वास्तविक समाजसेवा है। हमें किसी प्राकृतिक आपदा की प्रतीक्षा नहीं करना चाहिए। हम अपने अन्दर की दिव्यता को जागृत करेंगे तो स्वतः ही अच्छे समाज सेवक बन सकते हैं।

### तो जीवन बनेगा मूल्यवान...

प्रेरक वक्ता प्रो. ईवी बीके गिरीश ने कहा कि भटकाव और ठहराव में अन्तर होता है। भटका हुआ इधर-उधर घूमता रहता है और ठहरा हुआ स्थिर रहता है। भटकी हुई नदी प्यासे के पास जाती है और कुएं के पास प्यासा जाता है। ऊपर से नीचे जाने वाला मीठे से खारा हो जाता है और नीचे से ऊपर जाने वाला मीठा होता है। जीवन एक अनुभूति है। जीवन में शान्ति, स्नेह, आनन्द और खुशी तब आता है जब हम सकारात्मकता का अनुभव करते हैं। स्वयं को आत्मा समझने का ज्ञान ही जीवन का आधार है।

## सुरक्षा सेवा प्रभाग का तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

# ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान, मेडिटेशन आज सेना के लिए बहुत जरूरी है: रक्षा राज्यमंत्री

**आबू रोड (राजस्थान)।**

ब्रह्माकुमारीज़ के आनंद सरोवर परिसर में आयोजित तीन दिवसीय सुरक्षा सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ भारत सरकार के रक्षा राज्यमंत्री अजय भट्ट, भारतीय नौसेना के पूर्व वाइस चीफ वाइस एडमिरल सतीश नामदेव घोरमाड और मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने किया। सम्मेलन में तीनों सेनाओं जल, थल और वायु सेना के अधिकारी और असम राईफल्स, नौसेना, सीमा सुरक्षा बल, सीआरपीएफ से भी अधिकारी पहुंचे हैं। सुबह-शाम मेडिटेशन सत्र का आयोजन किया जाएगा।

## रक्षा राज्यमंत्री भट्ट बोले- योग से केंद्रित होता है ध्यान

शुभारंभ पर रक्षा राज्यमंत्री अजय भट्ट ने कहा कि सेना, अधिकारियों को आज योग की जरूरत है। योग से हमारा ध्यान लग जाता है। एकाग्रता बढ़ जाती है। ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग में ध्यान केंद्रित करने के लिए जो मेडिटेशन सिखाया जा रहा है उसका सभी लाभ लें। देश की सुरक्षा के लिए सिक्योरिटी फोर्स को ध्यान केंद्रित करना जरूरी है। योग से हमारा ध्यान केंद्रित होता है। ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान, मेडिटेशन आज सेना के लिए बहुत जरूरी है। राजयोग से जीवन सफल होगा और हम अपना कार्य बेहतर तरीके से कर पाएंगे।

हमारा देश पहले वाला देश नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत की तीनों सेनाएं, जल, थल और वायु तीनों ही बहुत मजबूत हैं। आतंकवाद पूरी तरह से खात्मे की ओर बढ़ रहा है। हमारे जवान सरहद पर

बिना थके दिन-रात देश की रक्षा करते हैं। विपरीत परिस्थितियों में बार्डर पर डटे रहना यही तो कर्मयोग है। हम यहां कर्मयोगी बनने आए हैं। तू लाख कमा ले हीरा मोती पर याद रखना कफन में जेब नहीं होती है। बड़े-बड़े योगी हैं, तपस्पी हैं लेकिन अंत में शरीर शांत होता है तो कहते हैं ओम शांति। लेकिन कर्मयोगियों का पुरुषार्थ सदा याद रखा जाता है। एक दिन सभी को जाना है लेकिन कुछ ऐसा कर जाएं कि लोग याद रखें। अपना काम, अपना नेतृत्व खुद करिए। जो मुझे ड्यूटी मिली है उस पर हम न्यौछावर होते हैं इसलिए सेना के समर्पण को आज सभी याद करते हैं। खुश रहने का मंत्र है कि जिस हाल में प्रभु आपने रखा उस हाल में खुश रहिए। हम जहां जिस सेवा में, जो हमारी ड्यूटी हो उस पर पूरा ध्यान हो तब हम अपने कर्तव्य के साथ न्याय कर पाएंगे।

### राजयोग से विकारों को जीतते हैं

भारतीय नौसेना के पूर्व वाइस चीफ वाइस एडमिरल सतीश नामदेव घोरमाडे ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में राजयोग मेडिटेशन सीखने के बाद मेरी सोच बदल गई। राजयोग से हमारे अंदर के विकारों पर विजय प्राप्त करते हैं। क्योंकि सबसे बड़ी चुनौती है खुद की कमजोरियों को जीतना, कमजोरी को ताकत बनाना। राजयोग से हम खुद को मानसिक रुप से ताकतवर बना सकते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ में सारा कार्य ला एंड लव अर्थात प्रेम और नियम से किया जाता है।

### यहां का मैनेजमेंट बहुत अच्छा है

दिल्ली से डीआरडीओ के कैप्टन शिव सिंह भाई ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से लाखों लोगों का जीवन बदल गया है। आप सभी भी अपने जीवन में जरुर शामिल करें। सम्मेलन में भाग लेने आए कोस्ट गार्ड से डिप्टी कमांडर श्रीपाल ने अनुभव सुनाते हुए कहा कि यहां मेडिटेशन की नई विधि सीखने को मिली। यहां का मैनेजमेंट बहुत ही व्यवस्थित है। हर कोई स्वेच्छा से सेवा कर रहा है।

### मैं आत्मा भी मास्टर सर्वशक्तिवान हूं...

मुंबई से आईं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका दीपा दीदी ने कहा कि रोज सुबह उठते ही संकल्प करें मेरा जन्म महान कार्यों के लिए हुआ है। मेरे सिर पर सदा परमात्मा का वरदानी हाथ है इसलिए सफलता हुई पड़ी है। मैं भगवान का बच्चा हूं। सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर की संतान मैं आत्मा भी मास्टर सर्वशक्तिवान हूं। कर्नल सती ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन को अपनाने के बाद मेरा जीवन बदल गया। आत्मबल बढ़ने के साथ एकाग्रता बढ़ गई। मन शांत हो गया। वास्तव में राजयोग से हमें जीवन जीने की कला मिलती है। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन भाई ने भी संबोधित किया।

### इन बातों का करें पालन

उपाध्यक्ष बीके शुक्ला दीदी ने कहा कि हमें जीवन में किन बातों की जरुरत है वह यहां सिखाया गया। राजयोग का ज्ञान स्वयं परमपिता परमात्मा इस धरा पर आकर ब्रह्मा तन का आधार लेकर मनुष्य आत्माओं को देते हैं। राजयोग से जीवन की सर्व समस्याएं दूर हो जाती हैं। मन शक्तिशाली बन जाता है। विचारों में सकारात्मकता आ जाती है। अध्यक्ष अशोक गाबा, बीके सारिका बहन, मेडिकल विंग के कार्यकारी सचिव डॉ. बनारसीलाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

### मेडिटेशन से बढ़ता है आत्मबल

सुरक्षा सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्ष राजयोगिनी बीके शुक्ला दीदी ने कहा कि जब हमारा आत्मबल मजबूत होगा तो हम जो कर्म करेंगे वह पूरी एकाग्रता के साथ कर पाएंगे। आज के समय में सबसे जरुरी है खुद को नकारात्मक विचारों, हीन भावना, कमजोर संकल्प से सुरक्षित करना। नॉलेज एक पावर है। आध्यात्मिक ज्ञान से हमारा आत्मबल मजबूत होता है, मन शक्तिशाली होता है। मन के दूषित विकार, मनोभाव दूर हो जाते हैं। मेडिटेशन से माइंड की शक्ति बढ़ जाती है। मन शांत हो जाता है।

### यह कला सीखना जरूरी

माउंट आबू में सीआरपीएफ के डीआईजी डीएस राठौर ने कहा कि जीवन को आसान बनाना है तो हमें यह निश्चय करना होगा कि हम एक आत्मा हैं। हम पवित्र, पावरफुल, सुंदर आत्मा हैं। यह बात यहां जानने को मिली। सुरक्षाबल के लोग तनाव से कैसे दूर रह सकते हैं यह बात यहां जानने को मिली। यहां सीखा है कि हम परमात्मा से हम कैसे एनर्जी ले सकते हैं। खुश कैसे रहना है यह बात यहां सीखी है। हमारे अंतर्मन को बाहरी परिस्थितियां डिस्टर्ब न कर सकें यह कला जरुर सीखें।

### बच्चा बनेंगे तो बचे रहेंगे

लेफ्टिनेंट कर्नल विकास चौहान ने कहा कि पांच दिन तक आपने यहां जो ज्ञान प्राप्त किया उसे जीवन में आत्मसात करने के लिए सात दिन का राजयोग मेडिटेशन कोर्स करना जरुरी है। यहां से जाकर सभी अपने-अपने स्थान पर राजयोग कोर्स जरुर करें। भगवान ने कहा है कि बच्चा बनेंगे तो बचे रहेंगे। हम भाग्यवान हैं कि भारत देश में जन्म लिया। जीवन में कठिनाइयां आएंगी लेकिन आप सेफ रहेंगे।

रियल लाइफ

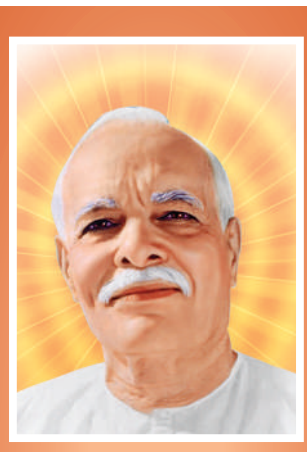

**प्रजापिता ब्रह्मा बाबा,** संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

बुद्धि दिव्य नहीं हुई होगी तो परमात्मा के पवित्र ज्ञान रूपी अमृत को धारण कैसे कर सकेगी?

# ब्रह्मचर्य व्रत से बुद्धि होती है दिव्य, ज्ञान है दिव्य चक्षु

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

कई जिज्ञासु कहते- बहनजी, हमें बहुत-सी बातों में तो निश्चय है, कुछेक में नहीं है। वहाँ आबू जाकर शायद वह भी निश्चय हो जाएगा। अन्य कहते- बहन जी, हमारे जीवन में कुछ परिवर्तन तो अवश्य आया है परन्तु हमारे संस्कार ऐसे कड़े हैं कि हम इस 'काम' महाशत्रु पर विजय नहीं पा सकते। आप हमें आबू में बाबा के पास ले चलिए शायद वहां उनसे सम्मुख मिलने पर हम अपने इस संस्कार को भी वहां जाकर ठीक कर पाएंगे।

हम ब्रह्माकुमारी बहनें कहतीं 'ब्रह्मचर्य व्रत से ही बुद्धि दिव्य होती है। ज्ञान ही दिव्य चक्षु है। दिव्य बुद्धि और दिव्य चक्षु द्वारा ही तो परमात्मा को जाना जा सकता है। अगर बुद्धि दिव्य नहीं हुई होगी तो वह परमपिता परमात्मा के पवित्र ज्ञान रूपी अमृत को धारण कैसे कर सकोगी? ज्ञान रूपी प्रकाश नहीं होगा तो मन रूपी आंख प्रभु को देखेंगी कैसे? अतः पहले आप ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके बुद्धि को दिव्य करो और ईश्वरीय ज्ञान की अच्छी तरह धारणा करके निश्चय-बुद्धि बनो, तभी हम आपको ले चलेंगी। ब्रह्मचर्य की धारणा न होना ही इस बात का प्रमाण है अभी आप में स्त्री-पुरुष का भान है अर्थात् अभी आपकी देह-दृष्टि है और आप आत्मा को देखने की बजाय शरीरों को देखते हैं और स्वयं को भी देह मानते हैं। देह-दृष्टि और देह-बुद्धि होने पर आप तो ब्रह्मा बाबा की भी देह ही को देखेंगे। आप आत्माओं में से परम, जो परमात्मा (परम आत्मा) शिव, ब्रह्मा बाबा के तन में आते हैं, उन्हें तो आप देख नहीं सकेंगे। देह-बुद्धि होने के कारण आपकी बुद्धि ज्ञान के सूक्ष्म रहस्यों को तो पकड़ नहीं सकेगी और सूक्ष्म अतिसूक्ष्म परमात्मा को तो पहचान नहीं सकेगी। अतः अगर आपने ब्रह्मचर्य व्रत की धारणा नहीं की होगी और हम आपको आबू बापदादा (शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा) के पास ले चलेंगी तो हमें दंड मिलेगा। जिज्ञासु कहते- बहन जी, क्या बाबा दंड भी देते हैं? बहन जी- हमारा तो यही निवेदन है कि आप हमें ले चलिए। शायद वहां जाने से हमारा निश्चय पक्का हो जाएगा।

ब्रह्माकुमारी बहनें कहतीं कि निश्चय तो ज्ञान से पक्का होता है। ज्ञान, बुद्धि में तभी धारण होता है जब मनुष्य ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता है। अन्न दोष तथा संगदोष से बचता है। अतः पहले आप इन नियमों का पालन करो ताकि आपके निश्चय की नींव पक्की हो। यदि आप परमपिता परमात्मा से मनोमिलन मनाने के लिए और उससे परम आनन्द और अवर्णनीय अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति के लिए इतना त्याग भी नहीं कर सकते, काम रूपी विष को नहीं छोड़ सकते, तो हम आपको बापदादा के पास ले जाने में असमर्थ हैं। आप इतनी अनमोल चीज़ को पाना चाहते हैं। परन्तु उसके लिए इस काम रूपी दुःखदायक चीज़ को भी नहीं छोड़ सकते। इससे स्पष्ट है कि आपने यह ज्ञान अभी नहीं समझा है। हम आपको लायक बनाकर ही यज्ञ में ले जाना चाहती हैं, क्योंकि अपवित्र आत्मा को वहां ठहरने की मना है। हंसों में बगुले का बैठना अच्छा नहीं लगता। वहां के शुद्ध वातावरण को बिगाड़ने का दोषी हम आपको नहीं बनाना चाहतीं। आप पहले बुद्धि रूपी कलश को काम रूपी विष से खाली कर इसे ज्ञान रूप अमृत से भरो, तभी हम आपको उस सर्वोच्च पिता के पास ले चलेंगी। वरना हमें भी दंड मिलेगा। ब्रह्मा बाबा के पास ले चलेंगी तो हमें दंड मिलेगा।

बाबा इस विषय में एक प्रसिद्ध आख्यान सुनाते हैं। वह आख्यान यह है कि एक परी मृत्युलोक के किसी मनुष्य को देवलोक में अथवा इन्द्र की सभा में ले गयी। वहाँ दूसरे देवी-देवताओं के मन में ऐसा महसूस हुआ कि आज इस सभा में मृत्युलोक का कोई विषयी व्यक्ति किसी तरह आ बैठा है। अतः सभा में वायुमण्डल बिगड़ने के कारण थोड़ी हलचल हुई। आख़िर इन्द्र ने पूछा कि कौन परी इस विकारी दृष्टि तथा अशुद्ध वृत्ति वाले मनुष्य को इन्द्र सभा में लाई है ? इन्द्र ने उस मनुष्य के साथ परी को भी सभा से निकाल दिया और वह परी मृत्युलोक में एक वृक्ष बन गई। **क्रमशः**

प्रेरणापुंज

# त्याग के बिना तपस्या नहीं और तपस्या के बिना सेवा फीकी है

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

आज बाबा बोले मैं बच्चों को ज्यादा याद करता हूं। अगर बच्चे ज्यादा याद करें तो अहो सौभाग्य। हमको बाबा पदमापदम भाग्यशाली बनाने के लिए कितना याद करता है। हम कहते बाबा, आपको तो अनेक बच्चे हैं, हमको तो एक आप हो। हमें बाबा से साकार, अव्यक्त और निराकार तीनों ही इक्ट्ठी भासना मिलती है। अगर वह न आता तो इनकी गोद के बच्चे कैसे बनते, यह न होता तो उनको कैसे पहचानते। हमारे सामने एक में तीन हैं। तीनों की भासना जिस आत्मा के अन्दर भरी हुई है उसका आवाज निकलता है, बाबा आपको याद क्या करें, आप भासना ही दे रहे हो।

**राजयोगिनी दादी जानकी,** पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

> बाबा का एक-एक बोल कितना गुह्य, गोपनीय और रहस्ययुक्त है। डीप जाओ तो पता चलेगा, गोपनीय है, स्नेह जोड़ने वाला है।

त्याग, तपस्या और सेवा में पहले क्या? तपस्या के पहले त्याग, त्याग के बिना तपस्या नहीं, तपस्या के बिना सेवा फीकी है। समझाने की हिम्मत तब आती है जब पूरी समझ हो, पूरा निश्चय हो। निश्चय से बहादुर बनते हैं तो हिम्मत काम करती है। निश्चय का बल है। बाबा का जो ज्ञान है, उसका रस अन्दर भरा हुआ हो। बाबा का एक-एक बोल कितना गुह्य, गोपनीय और रहस्ययुक्त है। डीप जाओ तो पता चलेगा, गोपनीय है, परमात्मा से स्नेह जोड़ने वाला है, उसमें बहुत रहस्य समाया हुआ है। एक-एक बोल ऐसे सुनते, मन को लगा तो मन्मनाभव हो गए। आनंद आ गया। मन्मनाभव के पहले देह सहित देह के सब संबंध त्याग। सर्व धर्मान परित्यज्य.... इस त्याग से तपस्या शुरू हो गई। दिल ने बाबा को अपना बना लिया। जैसे शादी होती है तो एक से जोड़ते, त्याग बहुतों से हो जाता। तो दिल से सबका त्याग। मामेकम्, देह सहित देह के सब संबंध त्याग।

बाबा ने कितनी समझ दी है। बाबा को समझदार बच्चे चाहिए। एक-एक बात प्यार से समझाओ। हमारे पास इतना खजाना है, उसका जितना मंथन करो, जितना औरों को समझाओ तो जैसे अथॉरिटी आ जाती। एक योग की, हम किसके बच्चे हैं, योग से पता चलता है। न सिर्फ बुद्धि से, बुद्धियोग से। बुद्धि से समझा यह बाप है, परन्तु उससे जो प्राप्ति, अनुभव की शक्ति है। वह अथॉरिटी वाला बना देती है। आज कईयों को आश्चर्य लगता यह कहां से बोलते हैं। बाबा कितनी अथॉरिटी से समझाता है।

कभी बाबा को संकोच नहीं होता है, यह महात्मा है, सन्यासी है। जानते हैं यह न होते तो दुनिया पाप में जलकर खत्म हो जाती। परन्तु अभी हमको समझ है। बुद्धि से समझाएंगे तो कहेंगे अभिमान है, योग से समझाएंगे तो कहेंगे राइट है। नम्रता से समझाया। नम्रता से सत्यता अपने आप सिद्ध हो जाती है। सुनने वाले की आंख खुल जाती है, फिर उनका दिल कहता है और सुनूं। कभी वाद-विवाद कोई नहीं कर सकता है। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा नजदीक खींचता है। हम लड़ना नहीं जानते हैं, किसी को क्रिटिसाइज नहीं करते हैं। **क्रमशः**

अव्यक्त इशारे

# मैं निर्विघ्न आत्मा हूं की स्मृति से विघ्नों का सामना कर सकेंगे

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

> बाबा कहते हैं- तुम मेरे बच्चे कल्प-कल्प के सिकीलधे हो, कभी कहेगा विश्व के मालिक हो, दिव्यगुणधारी हो, कितने टाइटिल देते हैं।

हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, यह स्मृति में लाओ तो स्मृति से समर्थी आती है। कर्म कान्सेस नहीं बनो, इमर्ज करो मैं कौन हूं, किसका बच्चा हूं, बाबा क्या है, मैं कौन हूं, इस स्मृति से साथ का भी अनुभव करेंगे, नशा भी अनुभव करेंगे और जो आपका संकल्प है उसमें सफलता आ जाएगी। अव्यक्त बापदादा की पालना कोई कम नहीं है। सूक्ष्म रूप से बाबा बहुत मदद करता है तो उसका फायदा उठाओ। फायदा उठाने आता है ना? बाबा ने जो स्मृतियां दी हैं, रोज बाबा टाइटल देता है उसे ही याद रखो तो नशा चढ़ेगा। जैसे बाबा कहता है आप मेरी आंखों के तारे हो, तारा आंखों में समाया होता है। तुम मेरे बच्चे कल्प-कल्प के सिकीलधे हो, कभी कहेगा विश्व के मालिक हो, कभी कहेगा दिव्यगुणधारी हो, कितने टाइटिल, कितने वरदान बाबा देता है। उसमें भी कितना बल होता है।

**राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी),** पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मुरली को अगर मन में रिवाइज़ नहीं किया तो याद नहीं रहेगा। हमारी आयु बड़ी है या बुद्धि बिज़ी रहती है। चलो तीन पेज़ भूल जाएं वरदान तो याद रख सकते हैं। वरदान भी मानो भूल गया, एक अक्षर तो याद रख सकते हैं- मेरा बाबा, बस। वह तो याद आ सकता है। बाबा याद आया तो वर्सा आएगा ही। बीज में झाड़ समाया हुआ है लेकिन दिल से कहो-मेरा बाबा, मुख से वर्णन करना उच्चारण करना वह अलग चीज़ है। तो इमर्ज करो, स्मृति में लाओ। समझो कोई विघ्न आता है, बाबा ने हमको कहा तुम मेरे निर्विघ्न बच्चे हो। बाबा ने मेरे को क्या बनाया। मैं निर्विघ्न आत्मा हूं। अगर यह स्मृति आई तो विघ्न को सामना करने की शक्ति आ जाएगी। इसलिए अपने अन्दर रिवाइज़ करो, स्मृति में लाओ, बस।

दिलाराम हमारी दिल लेने वाला दिलवर है, रहवर है। दिलवर है दिल की बात को अच्छी तरह से जानने वाला। रहवर है रास्ता दिखा रहा है। साथ ले चल रहा है। साथ और समीपता का अनुभव हो तो भी सतयुग में साथ आएंगे। समीप आना भी बड़ा भाग्य है। राज्य नहीं तो भाग्य तो है। राज्य करने वालों के समीप आने का भी भाग्य है। वहां भी तो साथी होंगे। समीप आने के लिए सच्ची भावना सच्चा प्यार चाहिए। विश्वास पक्का। कोई मेरा विश्वास ढीला कर नहीं सकता है, संशय आ नहीं सकता। साथ वाला अच्छी तरह से जानता है। अंग-संग साथ रहने वाला न जानें, बाहर वालों का दोष नहीं। जो समीप हैं, साथी हैं, वह जानते हैं। समीप आए कैसे? निमित्त कोई विशेषता से, कोई सेवा से समीप आ गए। बाबा ने पकड़ लिया।

बाबा पहले अंगुली पकड़ता, अंगुली से पहाड़ उठाया, अंगुली प्रीत वाली होगी तो सहयोग देगी। प्रीत के बिगर सहयोग की अंगुली भी नहीं दे सकते। अंगुली हाथ के बिगर तो कटकर नहीं आएगी। अंगुली आई माना बाबा ने हाथ ले लिया। फिर कहता तुम मेरी भुजा हो। हाथ भुजा के बिगर आ नहीं सकता। भगवान की भुजा बन गया तो फिर कहां जाएगा। **क्रमशः**

# अध्यात्म जगत की मैनेजमेंट गुरु

# बीके लक्ष्मी

**75 साल की उम्र में भी दधीचि ऋषि मिसल विश्व कल्याण की सेवा में जुटीं**

**नारी शक्ति की मिसाल राजयोगिनी लक्ष्मी दीदी का जीवन सेवाभाव का उदाहरण है। मुख्यालय शांतिवन में हर वर्ष आने वाले लाखों भाई-बहनों के रहने, ठहरने से लेकर ज्ञान-ध्यान की सुव्यवस्था, कुशल प्रबंधन आपकी तीक्ष्ण बुद्धि, समझ, ज्ञान और विशाल व्यक्तित्व की गवाही देता है।**

जन्म दिन
15 अक्टूबर 1950

शिव आमंत्रण आबू रोड/राजस्थान।

इस धरा पर कुछ महान आत्माएं ऐसी भी होती हैं जिन पर भगवान भी नाज करते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी लक्ष्मी (मुन्नी) दीदी अध्यात्म जगत में कुशल प्रबंधन की जीती-जागती मिसाल हैं। 15 अक्टूबर 1950 को जन्मी जीवन के 75 बसंत पूर्ण कर चुकीं लक्ष्मी दीदी उम्र के इस पड़ाव पर भी अपनी कुशाग्र बुद्धि और स्मरण शक्ति के लिए जानीं जाती हैं। ब्रह्माकुमारीज़ के मैनेजमेंट से लेकर व्यवस्थाओं के कुशल संचालन में आपका कोई सानी नहीं है। आपने अपना जीवन दधीचि ऋषि मिसल विश्व सेवा और विश्व कल्याण में झोंक दिया। इस उम्र में भी दिन-रात विश्व कल्याण का भाव और सेवा आपकी रग-रग में बसती है। शिव आमंत्रण के संपादक बीके कोमल से विशेष चर्चा में उन्होंने अपने जीवन के अनछुए पहलुओं को उजागर किया, प्रस्तुत है विशेष साक्षात्कार...

देश का सबसे बड़ा औद्योगिक शहर कोलकाता आर्थिक के साथ आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। मां दुर्गा की भक्ति में लीन इस शहर की अपनी विशेषता है। इसी शहर में बीके मुन्नी का जन्म एक धार्मिक पारायण परिवार में 15 अक्टूबर 1950 को हुआ। पांच वर्ष की आयु में ही मां का साथ छूट गया और ममता का साया सर से उठ गया। इसके बाद पिता की दूसरी शादी हुई जिससे छह भाई-बहनों में सबसे बड़ी होने के नाते मुझसे सबका बहुत लगाव और प्यार था। मैं बचपन से ही पवित्र जीना चाहती थी। सन्यासी बनकर घर में रहना चाहती थी। मेरी इच्छा ही नहीं थी कि मैं अपने परिवार से दूर जाऊं। इसलिए शादी का इरादा दूर-दूर तक नहीं था।

**हमेशा क्लास में आती थीं प्रथम** : बीके मुन्नी पढ़ाई में बहुत ही होशियार थी। इसलिए वे लंबे समय तक कई क्लास में मॉनीटर रही। क्लास में हमेशा प्रथम आती थीं। बचपन में इच्छा थी कि पढ़ाई करके डॉक्टर या इंजीनियर बनकर परिवार में ही रहकर सबकी सेवा करुं। ऐसा करने का ख्याल बाल्यकाल से ही आने लगा था। उन्होंने कहा कि मुझे अकेले में रहना पसन्द ही नहीं था, इसलिए संयुक्त परिवार में रहना चाहती थी।

**पहली बार 1967 में ब्रह्मा बाबा से मिलने माउण्ट आबू आई** : चर्चा में बीके मुन्नी ने बताया कि एक दिन मैं पिता के साथ सेंटर पर पहुंची तो वहां का सुंदर वातावरण देखकर मुग्ध हो गई। तभी लाल बत्ती जलाकर मुझे योग में बिठाया गया। उस समय ऐसी अनुभूति हुई कि जिसे मैं ढूंढ रही थी वो यही दुनिया है। अब यही मेरा घर है यही मेरी दुनिया है। फिर मैं निर्मल शांता दादी से मिली उन्होंने मुझे इतना प्यार दिया जो लगा मेरा यही घर है। मैं पहली बार 1967 में ब्रह्मा बाबा से मिलने माउण्ट आबू आई। बाबा के कमरे में झांकी, तभी बाबा ने बुला कर गोद में बिठा लिया। गोद में बिठाकर बाबा ने बहुत प्यार किया। बाबा ने पूछा बच्ची कितना पढ़ी हो आगे कितना पढ़ोगी। बाबा ने मुझसे बात किया कि मैं सोच में पड़ गई कि ये कौन हैं जो मेरे मन की बात कर रहे हैं। मैंने कहा इतना पढ़ी हूं कि आपकी सेवा कर सकती हूं और मुझे कुछ नहीं करना। फिर मेरा मन पढ़ाई से ऊबने लगा। बाबा से मिलने के बाद मैंने कहा कि बाबा इग्जाम देकर मैं फिर सेवा में आ जाऊंगी। फिर घर जाकर सफेद रंग के कपड़े पहनने प्रारम्भ कर दिए। यह मेरे चाचा को अच्छा नहीं लगा और वे जल्दी शादी कर देना चाहते थे। उसके बाद मैं साकार बाबा के पास 1968 में आई। प्रतिदिन मैं एक टाइम बाबा के साथ भोजन करती थी। 17 दिन रहने के बाद मेरे घर जाने का समय आ गया और फिर बाबा ने बोला बच्ची घर छोडक़र क्यों जा रही हो। मैंने कहा एक बार जा रही हूं फिर हमेशा के लिए आऊंगी।

## जन्म के साथ ही परिवार में एक नया सूर्योदय हुआ-

कहते हैं कि जन्म लेने वाले अपने साथ अगले और पिछले जन्मों की उपलब्धियां लेकर आता है। ऐसा ही कुछ था बीके लक्ष्मी के साथ। बीके लक्ष्मी के पिता हिन्द मोटर्स में उन दिनों मैनेजर हुआ करते थे। लेकिन जैसे ही लक्ष्मी का जन्म हुआ पूरे परिवार में एक नया सूर्योदय हुआ। हिन्द मोटर्स से मैनेजेर की नौकरी छोड़ लोहे का कारोबार प्रारम्भ हुआ और देखते ही देखते यह कारोबार बड़ा होता गया और शहर के सुप्रसिद्ध व्यवसायी बन गए। इसके बाद ही उनके पिता ने नाम लक्ष्मी रखा।

## दीदी का बचपन से ही था सन्यासी बनने का सपना

मुझे ईश्वरीय ज्ञान भी पिताजी के द्वारा ही मिला। जब मैं छोटी थी तब हमारे पिताजी अपने दोस्त के घर जाते थे जो ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े हुए थे उन्होंने ही मेरे पिता जी को ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के बारे में बताया था। जब मेरे पिता सेवाकेन्द्र पर जाने लगे तो उन्होंने तत्कालीन सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके भारती बहन (जो इस समय राजकोट में हैं) को मेरी विशेषताओं को बताते हुए कहा कि वह शादी नहीं करना चाहती और सन्यासी बनना चाहती है। तब भारती दीदी के कहने पर पिताजी सेवाकेन्द्र ले गए। उस समय मैं नौवीं क्लास में पढ़ती थी और मेरी उम्र 16 साल थी।

**भंडारा संभालने का वरदान** : जब मैं जाने लगी तो बाबा ने कहा कि सौगात लो मैंने मना किया तो बाबा ने कहा बाबा के घर से खाली नहीं जाते। फिर बाबा ने मुझे लच्छू दादी के साथ स्टॉक में भेजा और कहा जो चाहिए ले लो। मैं गई और सिर्फ एक रूमाल लेकर आई। फिर बाबा ने प्यार से गले लगाया। बाबा ने कहा बच्ची मधुबन में बाबा का भंडारा संभालेगी।

## कागज और कलम से संभालती हैं पूरा मैनेजमेंट

बीके मुन्नी बहन 75 वर्ष की उम्र में भी मस्तिष्क के मामले में एकदम यंग हैं। उन्हें कप्यूटर का ज्ञान नहीं है लेकिन सब चीजें जबानी याद रहती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय आबू रोड में रहकर पूरे कार्यक्रमों का संचालन करती हैं। राजयोग ध्यान और अध्यात्म की शक्ति से सुपर कप्यूटर की तरह काम करती हैं। आज भी वे 20 घंटे तक काम करने की क्षमता रखती हैं। एक कागज और कलम से पूरे प्रबंधन को मैनेज करती हैं। यही प्रतिभा आपको सबसे अलग करती है।

## दादी रोज गोद में लेकर पढ़ती थीं मुरली

दादी की मूरत मां जैसी थी। दादी प्रतिदिन हमें रात को गोद में लेकर मुरली खुद पढ़ती और मुझे भी सुनाती थीं। कभी भी यदि कोई गलती हो जाती थी दादी ने कभी डांटा नहीं। जब कोई गलती दादी के सामने हो जाती थी तो दादी कहती थीं मुन्नी ऐसे नहीं यह काम ऐसे होगा। उनका बोलने का ढंग यही था। 18 वर्ष की उम्र में रहने लगी है। अभी 50 साल पूरा हो गया। दादी इतना प्यार करती थीं कि मैं हमेशा ज्यादा समय उनके साथ ही बिताना चाहती थी।

## राष्ट्रपति भवन में नेपाल डिवाइन कल्चरल ग्रुप की प्रस्तुति

# कलाकारों ने दिखाई प्रतिभा

**शिव आमंत्रण, नई दिल्ली।**

ब्रह्माकुमारीज़ नेपाल डिवाइन कल्चरल ग्रुप द्वारा राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जो नेपाल, भारत की कला संस्कृति, मूल्यों, सामाजिक जीवन शैली, पारंपरिक मान्यताओं और आपसी सद्भाव को दर्शाता है। इस कार्यक्रम

की मुख्य अतिथि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू थीं। नेपाल सेवाकेंद्रों की निदेशिका बीके राज दीदी, सह निदेशिका बीके किरण दीदी, बीके रामसिंह ऐर एवं डिवाइन कल्चरल ग्रुप के 38 कलाकार उपस्थित थे।, नेपाल की ओर से राज दीदी ने दिव्य उपहार के रूप में राष्ट्रपति को भगवान पशुपतिनाथ का स्मृति चिंह भेंट किया।

## मेडिटेशन से हमारी वाणी में मधुरता आती है

**शिव आमंत्रण, नीमच (मप्र)।** जिला कलेक्टर कार्यालय के सभी अधिकारी और कर्मचारियों के लिए मेडिटेशन एवं तनावमुक्ति कार्यशाला आयोजित की गई। कलेक्टर दिनेश जैन, एडीएम नेहा मीना मौजूद रहीं। बीके श्रुति दीदी ने कहा कि मेडिटेशन से वाणी में मधुरता, कर्मों में श्रेष्ठता और स्वभाव में सरलता आ जाती है। सबजोन संचालिका बीके सविता दीदी ने हम खुद को नहीं देखते और दूसरों को देखकर ही तुलना करते हैं तभी तनाव उत्पन्न होता है।

## अभिनेत्री रनौत ने बीके दीपक को किया सम्मानित

**शिव आमंत्रण, मुंबई।** नोवोटेल होटल में आयोजित कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत ने ब्रह्माकुमारी संस्था के सदस्य 180 वर्ल्ड रिकार्ड बनाने वाले बीके डॉ. दीपक हरके को इंटरनेशनल ग्लोरी अवार्डस-2023 से सम्मानित किया गया। इस मौके पर बीके क्रीना दीदी, बीके डॉ. सुवर्णा दीदी, बीके डॉ. त्रिवेणी दीदी उपस्थित रहीं। बीके क्रीना दीदी ने अभिनेत्री कंगना रनौत को संस्था के गतिविधीयों से अवगत कराया।

**शिव आमंत्रण, भोपाल (मप्र) |** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भोपाल आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ की जोनल निदेशिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अवधेश दीदी ने भाजपा की पदाधिकारी महिलाओं के साथ राजाभोज हवाई अड्डे पर मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री को संसद से महिला आरक्षण विधेयक पारित होने पर बधाई दी।

**तिरुवंतपुरम (केरल) |** ब्रह्माकुमारीज़ के शिवचिंतन भवन की 13वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने मुख्य अतिथि के रुप में भाग लेकर स्वर्ण जयंती समारोह का उद्घाटन किया। राज्यपाल ने कहा कि बहनों की त्याग-तपस्या सराहनीय है। इस मौके पर विधायक आईबी सतीश, विधायक विंसेंट, सूर्या कृष्णमूर्ति, राजयोगिनी बीके बीना दीदी, राजयोगिनी बीके उषा दीदी, राजयोगिनी बीके मिन्नी दीदी मुख्य रुप से मौजूद रहीं।

**शिव आमंत्रण, गाजीपुर/उप्र |** जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल मनोज सिन्हा से गाजीपुर प्रभारी बीके निर्मला दीदी, बीके स्मिता, बीके संजू एवं बीके संध्या ने मुलाकात की। इस अवसर पर बीके निर्मला दीदी ने उन्हें ईश्वरीय उपहार प्रदान किया। राज्यपाल ने संस्था द्वारा गाज़ीपुर और देश-विदेश में मानवता के कल्याण अर्थ किए जा रहे निस्वार्थ कार्यों के लिए बहनों का आभार जताया और प्रशंसा की।

## अब जवान सेवाकेंद्र आकर करेंगे पांच दिवसीय राजयोग मेडिटेशन कोर्स

# ब्रह्माकुमारीज़- आईटीबीपी के बीच एमओयू

**शिव आमंत्रण, जानकीपुरम/लखनऊ।**

भारत-तिब्बत पुलिस बल पूर्वी फ्रंटियर (आईटीबीपी) मुख्यालय अलीगंज लखनऊ और ब्रह्माकुमारीज़ जानकीपुरम के साथ एमओयू साइन किया गया। इसका उद्देश्य राजयोग मेडिटेशन द्वारा तनाव को प्रबंध करना है। अब आईटीबीपी के जवान हर तीन महीने में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर आकर सात दिन राजयोग का अभ्यास करेंगे। भारत-तिब्बत पुलिस बल देश का एक अग्रणी व अनुसाशित बल है जिसकी तैनाती अति दुर्गम क्षेत्र व मानव जीवन के प्रतिकूल परिस्थितिओं में रहती है। साथ ही बल के कर्मियों की लॉ एंड आर्डर की स्थापना के लिए जिम्मेदारी का निर्वहन करना पड़ता है। यह एमओयू आईटीबीपी के पूर्वी फ्रंटियर मुख्यालय महानिरीक्षक श्याम महरोत्रा, उप महानिरीक्षक विश्वामित्र आनंद, ब्रिगेडियर पी के जायसवाल, उप महानिरीक्षक

निर्भय सिंह, उप महानिरीक्षक मनधीर एक्का, उप महानिरीक्षक आरके चौहान और ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से बीके सुमन दीदी, बीके गिरीश भाई, बीके निर्मला दीदी द्वारा किया गया।

**शिव आमंत्रण, सूरत |** आईटीएम वोकेशनल यूनिवर्सिटी की ओर से ब्रह्माकुमारी अरुणा बहन को "डॉक्टरेट इन लिटरेचर" की उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्हें यह उपाधि विगत 30 वर्षों से समर्पित रुप से आध्यात्मिक एवं सामाजिक सेवाएं करने, लोगों में मूल्यों के प्रति बढ़ावा देने, सामाजिक बदलाव, नशामुक्ति के क्षेत्र में विशेष योगदान पर प्रदान की गई। कार्यक्रम में यह उपाधि इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के सिवन, आईटीएम के वाइस प्रेसिडेंट अतिरिक्त प्रोफेसर आरएसएस मणि, कुलपति डॉ. अनिल बिसेन ने प्रदान की। इस मौके पर विशेष रुप से मंगलवाड़ी सबजोन निदेशिका ब्रह्माकुमारी राज दीदी भी मौजूद रहीं।

**शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-**

वार्षिक मूल्य 150 रुपए तीन वर्ष 450 रुपए
आजीवन 3500 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

**पत्र व्यवहार का पता**

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

**For online transfer**

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 6377090960

Scan To Pay

**भिलाई :** जयंती दीदी का स्वागत गॉड ऑफ आनर और पंथी नृत्य से किया स्वागत

# त्याग-तपस्या से ही मिलती है सफलता

**शिव आमंत्रण, भिलाई/छग।** लंदन से पधारीं संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके जयंती दीदी के आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ के सेक्टर-7 स्थित पीस ऑडिटोरियम में एनसीसी कैडेट्स द्वारा गॉड ऑफ ऑनर और पारंपरिक पंथी नृत्य भिलाई में बसता है मिनी इंडिया थीम पर डिवाइन ग्रुप के बच्चों द्वारा स्वागत किया गया।

जयंती दीदी ने कहा कि त्याग और तपस्या के बिना सफलता नहीं मिलती है। आज दादियों ने मन की लेबोरेटरी में साइलेंस की शक्ति द्वारा परमात्म शक्तियों का एक्सपेरीमेंट कर इस संस्था के विशाल वट वृक्ष को संपूर्ण विश्व में खड़ा किया है। राजयोग भवन में आयोजित स्ट्रेस फ्री लाइफ में आपने प्रबुद्ध वर्ग को भी संबोधित किया, जिसमें डॉक्टर, प्रिंसिपल, उद्योगपति, समाजसेवी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पाटन, दल्ली राजहरा, नंदिनी अहिवारा, बेमेतरा, उतई, डोंडी लोहारा, जामगांव, बेरला सहित भिलाई के सेवाकेन्द्रों के भाई-बहनें पहुंचे थे। माउंट आबू से बीके हंसा दीदी, जोन निदेशिका बीके हेमा दीदी, बीके ऊषा दीदी उपस्थित रहीं। भिलाई निदेशिका बीके आशा दीदी ने आभार माना।

# व्यक्ति, वस्तु और वैभव से प्राप्त सुख अल्पकालिक होता है: जयंती दीदी

**शिव आमंत्रण, रायपुर।**

छत्तीसगढ़ शासन के संस्कृति विभाग, छग सिंधी अकादमी और ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा संयुक्त रूप से शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में रूहानी सिंधी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें लंदन से आईं अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयन्ती दीदी (आप भी सिंधी समाज से हैं) ने कहा कि मनुष्य की इच्छाएं अन्तहीन होती हैं। वह सारी जिन्दगी चाहिए-चाहिए करता रहता है। हम सुख को देहधारियों में ढूंढ़ रहे हैं। किन्तु वस्तु और वैभव से प्राप्त सुख अल्पकालिक होता है। जब हम स्वयं को आत्मा समझकर परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ते हैं तब जीवन में पवित्रता, सुख और शान्ति की प्राप्ति होती है। आत्मा स्वयं को भरपूर अनुभव करती है। सुखी रहना है तो अध्यात्म को जीवन में अपनाना होगा। गीता में कहा है कि मन ही अपना मित्र और मन ही शत्रु है। राजयोग से हम मन को अपना दोस्त बना लेते हैं। राजयोग के लिए स्वयं की और परमात्मा की पहचान जरूरी है।

उन्होंने कहा कि सिंधी समाज की यह विशेषता है कि दुनिया में जहां भी जाते हैं वहां पानी में शक्कर की तरह घुल मिल जाते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की शुरुआत सिन्ध हैदराबाद से हुई थी। विभाजन के पश्चात यह संस्था भारत में आ गई और राजस्थान के माउण्ट आबू में अपना मुख्यालय बनाकर सेवा शुरू की। लन्दन, अमेरिका, कनाडा, हांगकांग आदि अनेक देशों में संस्थान के सेवाकेन्द्र खोलने में सिन्धी समाज का अहम योगदान रहा है।

शदाणी दरबार के उदय शदाणी, गोदड़ीवाला धाम की महन्त मीरादेवी खूबचन्दानी, सिन्धी अकादमी के अध्यक्ष राम गिडलानी, पूज्य सिन्धी पंचायत के अध्यक्ष श्रीचन्द सुन्दरानी, चेम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष अमर पारवानी आदि ने भी सम्बोधित किया। अनेक सामाजिक संस्थाओं द्वारा जयन्ती दीदी का अभिनन्दन किया गया। उज्जैन संभाग की निदेशिका बीके उषा दीदी, जोनल निदेशिका बीके हेमलता दीदी ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन जयपुर की बीके चन्द्रकला दीदी ने किया।

**जयंती दीदी ने किया नवनिर्मित भवन का लोकार्पण**

# अब आनंद सरोवर भवन में बिता सकेंगे आनंद के पल

**दुर्ग (छत्तीसगढ़)।**

ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित आनंद सरोवर भवन का उद्घाटन अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका जयंती दीदी ने शिव ध्वजारोहण कर किया। शहर में पिछले 41 साल से ईश्वरीय सेवाएं चल रही हैं।

राजयोगिनी जयंती दीदी ने कहा कि परमपिता परमात्मा की कमाल है कि सारे विश्व के अंदर शांति के ऐसे स्थान बनवाए हैं जो मनुष्य आत्माओं की ज्योत जगाने, शांति का दान देने के निमित्त बने हैं। दुर्ग का भाव है फोर्ट अर्थात किला तो यह इतना शानदार किला बन गया है जो कि दुर्ग के अंदर जहां पर हर आत्मा की रक्षा भी हो सकती है। ऐसे

वातावरण में जहां पर परमात्मा की शीतल छाया हमें प्राप्त हो रही है, परमात्मा के संग का हमें अनुभव प्राप्त हो रहा है जिससे सब प्रकार की जो भी मन और तन की बीमारियां दूर हो सकती हैं। संचालन बीके रूपाली बहन ने किया। इस मौके पर अतिथि के रूप में जिला नागरिक सहकारी बैंक अध्यक्ष राजेंद्र साहू, चतुर्भुज राठी, अंशुल जैन, प्रभात पड़ियार सहित बड़ी संख्या में बीके भाई-बहनें मौजूद रहे।

# आध्यात्मिकता हमारे दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाती है

**शिव आमंत्रण, इंदौर/मप्र।** ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयन्ती दीदी के आगमन पर ज्ञानशिखर में समारोह आयोजित किया गया। सकारात्मक परिवर्तन द्वारा आनंदमय जीवन विषय पर संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सुख, शांति से परिपूर्ण आनंदमय जीवन के लिए हर क्षेत्र में सकारात्मकता को अपनाना जरूरी है। आध्यात्मिकता हमारे दृष्णिकोण को सकारात्मक बनाती है। दृढ़ और शुद्ध भाव से शुभ संकल्प करें तो विकट परिस्थितियां भी बदल सुगम हो जाती हैं। मन को निरर्थक और असाधारण, व्यर्थ विचार करने से बचाना है, क्योंकि मन की प्रकृति ही है सोच विचार

करते रहने की, कार्य करते हुए भी मन हमारा कल्याण की भावनाओं से भरा रहे तो भटकेगा नहीं, हम सदा खुश रहेंगे। जोनल निदेशिका बीके हेमलता दीदी, भिलाई की बीके आशा दीदी, उज्जैन से बीके ऊषा दीदी, सांसद शंकर लालवानी, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय की कुलपति रेणु जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। महापौर पुष्य मित्र भार्गव ने जयंती दीदी का सम्मान किया। सिंधी समाज एवं लांयस क्लब की ओर से भी सम्मान किया गया।

## भाग्य दर्शन भवन सेवाकेंद्र समाज को समर्पित

**इंदौर।** संगम नगर सेवाकेंद्र के नवनिर्मित 'भाग्य दर्शन भवन' का उद्घाटन ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके जयंती दीदी, टूरिज्म एंड कल्चर मिनिस्टर उषा ठाकुर जोन निदेशिका ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी, शक्ति निकेतन की संचालिका बीके करुणा दीदी, इंदौर की पूर्व महापौर उमा शशि शर्मा ने रिबन काटकर किया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके भावना दीदी ने अतिथियों का स्वागत किया।

**ग्वालियर:** 'सकारात्मक परिवर्तन के लिए जागरूक मीडिया' सेमिनार आयोजित

**शिव आमंत्रण, ग्वालियर/मप्र।** ब्रह्माकुमारीज़ की मीडिया विंग द्वारा सकारात्मक परिवर्तन के लिए जागरुक मीडिया विषय पर आयोजित किया गया। इसमें हैदराबाद से मीडिया विंग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके सरला दीदी, मुख्यालय से आए राष्ट्रीय संयोजक बीके शांतनु भाई, राष्ट्रीय संयोजक बीके सुशांत भाई, पत्रिका के संपादक नितिन त्रिपाठी, स्वदेश के समूह संपादक अतुल तारे, अहमदाबाद से आई बीके सारिका, आईटीएम के मीडिया विभाग के प्रमुख डॉ. मनीष जैसल, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके आदर्श दीदी ने अपने विचार व्यक्त किए। बीके ज्योति ने मेडिटेशन कराया और बीके वैशाली ने शुभकामनाएं व्यक्त की। संचालन डॉ. गुरुचरण सिंह ने किया। आभार बीके प्रहलाद भाई ने माना।

**राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)।** नीरज पब्लिक स्कूल, पेंडरी में कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें माउंट आबू से आए ब्रह्माकुमार भगवान भाई ने आदर्श शिक्षक हेतु नैतिक शिक्षा और सकारात्मक चिंतन विषय पर कहा कि शिक्षा देने के बाद भी अगर बच्चे बिगड़ रहे हैं उसका मतलब मूर्तिकार में भी कुछ कमी है। शिक्षक के अंदर के जो संस्कार हैं उनका विद्यार्थी अनुकरण करते हैं। शिक्षक होने के नाते हमारे अंदर सदगुणों का आचरण होना आवश्यक है। प्रिंसिपल भारती गौते, शा. वि. के प्रिंसिपल चेत्रराम, बीके मुरलीधर सोमानी ने भी विचार व्यक्त किए।

## विराट संत सम्मेलन आयोजित : राजिम-नवापारा में संतों को बग्घी में बिठाकर नगर में निकाली विशाल शोभायात्रा

# अध्यात्म से ही मिलेगा विश्व शांति का मार्ग

शिव आमंत्रण, राजिम-नवापारा (छग)।

ब्रह्माकुमारीज़ के त्रिमूर्ति भवन सेवाकेंद्र की ओर से विराट संत सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें प्रदेशभर से संत-महात्मा और महामंडलेश्वर ने भाग लिया। सम्मेलन के पूर्व सभी संतों को बग्घी में विराजित कर नगर में शोभायात्रा निकाली गई। इस दौरान जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। सम्मेलन में सभी संतों ने एक स्वर में भारत को स्वर्णिम बनाने और विश्व में शांति स्थापना के लिए संकल्प लिया। संतों ने जीवन में अध्यात्म को अपनाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के प्रयासों की सराहना की।

माउंट आबू से आए धार्मिक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके रामनाथ भाई ने कहा कि संतों की त्याग, तपस्या और पवित्रता के कारण ही आज भारत को विश्व गुरु मानते हैं। केवल भारत नहीं, बल्कि सारा विश्व योग-राजयोग सीखना चाहता है। आत्मा और परमात्मा का ज्ञान ही आध्यात्मिकता है। प्रभाग के जोनल संयोजक नारायण भाई ने कहा कि हमें फिर से समाज के अंदर जो समरसता, सौहार्द्र, सात्विकता को स्थापित करने के लिए मिलकर प्रयास करना होंगे। सिरगिट्टी आश्रम पांडुका के गोवर्धनशरण महाराज ने कहा कि एक जोत है सब दीपों में, सारे जग का नूर एक है। सच कहता हूं दुनिया वालों, हाकिम और हुजूर एक है। गहराई में जाकर देखो, सब धर्मों का सार एक है। एक वाहेगुरु, एक परमेश्वर, एक राम, श्री कृष्ण एक है, नाम भले ही अलग-अलग हों, पर भक्तों का भगवान एक है। इसी संदेश को ब्रहमाकुमारीज़ दे रही हैं। सबका उद्देश्य है सनातन आगे बढ़े। यही हम सबका भाव है। इसी भाव को लेकर आगे बढ़ते रहना है। इंदौर जोन की निदेशिका बीके आरती दीदी ने ऑनलाइन और रामबालक दास महाराज, संत युद्धिष्ठिर लाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन दिल्ली से आईं बीके राजेश्वरी दीदी ने किया। आभार बीके प्रिया बहन ने माना।

### सही जीवन जीना है तो राजयोग पर चलना होगा

जोधपुर से आए महामंडलेश्वर डॉ. शिवस्वरुपानंद महाराज ने कहा कि मैं पांच-छह साल से ब्रह्माकुमारी संस्थान से जुड़ा हूं। उससे पहले हम लोगों के मन में भी बहुत सारी भ्रांतियां थीं। मैं माउंट आबू भी गया हूं। ब्रहमाकुमारीज़ के 20-25 सेंटर्स में जा चुका हूं। मैं भी पहले लोगों के भ्रम का शिकार बना हुआ था कि स्वामी जी, आप तो महामंडलेश्वर हो, सनातन के प्रहरी हो, वैदिक मर्यादा का पालन करने वाले हो। आप कहां जा रहे हो, ब्रह्माकुमारीज़। मुझे बहुत भ्रमित किया गया। लेकिन जब मैं अंदर आया, पुष्पा बहन से मिला, उन्होंने मुझे सारे सेंटर्स दिखाए तो हकीकत सामने आ गई कि यदि सही जीवन जीना है तो राजयोग पर चलना है। तपस्या चर्या में चलना है, ब्रह्मचर्य का पालन करना है, मुमुक्षता को जानना है तो आपको इस योग पर चलना ही पड़ेगा। सन्यास लोगे तो सबसे पहले ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ेगा, तपस्या करोगे तो पहले ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ेगा। शिक्षा, यज्ञ, राजधर्म हर जगह ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ेगा। बिना ब्रह्मचर्य के कहीं भी आपकी गति नहीं है। गीता भी यही कहती है।

### इन संतों ने भी व्यक्त किए अपने विचार-

- दूधाधारी मठ के महामंडलेश्वर महंत रामसुंदर दास महाराज ने कहा कि हमसे चूक तभी होती है, जब अपने कर्त्तव्य को छोड़कर विकल्प ढूंढना शुरु करते हैं। हमें जो कार्य मिला है, उसे राघवेंद्र सरकार का कार्य समझकर करें।
- आयोध्या से आए आचार्य श्रीवत्स महाराज ने कहा कि उस महायोगी तक जाने के लिए हमें योगी बनना है। अगर हम आध्यात्मिक हो जाएंगे तो अपने आप हमारे में परिवर्तन होगा। मेरे परिवर्तन को देखकर दूसरे भी आकर्षित हों।
- पूर्व कैबिनेट मंत्री व भाजपा विधायक बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि मैं 40 साल से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा हूं। ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग से लोगों के जीवन में सुख-समृद्धि और सदाचार लाने का प्रयास कर रहा है। सुख पाने का एक रास्ता ब्रह्माकुमारी के मेडिटेशन से मिलता है।
- छत्तीसगढ़ योग आयोग अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा ने कहा कि ऐसा संत समागम ब्रह्माकुमारीज़ के सभी केंद्रों पर हो। संतों की वाणी से प्रभु से मिलने व उनके प्रति ध्यान करने का अवसर मिल जाए, तो आज के समय में बहुत बड़ी बात है।
- मडेली से आए महाऔघडेश्वर ज्योतिर्लिंग धाम के पीठाधीश रुद्रानंद प्रचंड वेगनाथ महाराज ने कहा कि हम सांसारिक कैरेक्टर में रहकर भी आध्यात्मवेदता हो सकते हैं।
- सेवाकेंद्र संचालिका बीके पुष्पा दीदी ने कहा कि चाहे संत-महात्मा हो या ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियां हों। परमात्मा शिव ने हमें जो मंत्र दिया, वो है मनमनाभव, मामेकम शरणम्। सर्वधर्मानि परित्यजते। संत भी जीवन का सार, सुख-शांति और पवित्रता को ही बताते हैं। यही ब्रह्माकुमारीज़ का भी लक्ष्य है कि जीवन में सुख-शांति और पवित्रता हो।

## दुल्हन की तरह सजधजकर पहुंचीं, शिवलिंग को पहनाई वरमाला

# 12 बेटियां बनीं शिवप्रिया, परमात्मा बने जीवनसाथी

शिव आमंत्रण, इंदौर।

अपने लिए तो सभी जीते हैं लेकिन समाज और विश्व कल्याण के लिए अपना जीवन अर्पण कर देना महान संकल्प, तप और साहस का निर्णय होता है। अध्यात्म की राह पर चलते हुए 12 बेटियां शिवप्रिया बन गईं। ये ब्रह्मचारिणी बेटियां दुल्हन की तरह सज-धजकर, श्वेत वस्त्रों में जब स्टेज पर पहुंचीं तो हर कोई भावुक हो उठा। माता-पिता और भाई-बहनें चुनरी की चादर बनाकर दुल्हन के वेश में स्टेज पर ले गए। इसके बाद परमात्मा शिव को अपना जीवन साथी स्वीकारिते हुए शिवलिंग पर वरमाला पहनाई। मौका था ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के जोनल मुख्यालय ओम शांति भवन की ओर से पिपलिहाना रोड स्थित कृष्णोदय नगर के पामट्री रिसोर्ट में आयोजित प्रभु समर्पण समारोह का। माता-पिता ने अपनी कन्याओं का हाथ जोनल निदेशिका आरती दीदी के हाथों में सौंपते हुए कहा कि आज से मेरी लाड़ली आपकी अमानत है। मुझे गर्व है कि मेरी बेटी ने विश्व कल्याण के लिए यह साधना का मार्ग चुना है। माता-पिता बोले- ये आंसू दुःख के नहीं खुशी के हैं। दैवी स्वरूप बेटियों को पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया। कार्यक्रम में एक हजार से अधिक लोग मौजूद रहे।

### परमात्मा को पाने के बाद कुछ पाना शेष नहीं रह जाता है

संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका जयंती दीदी ने कहा कि सच्चा समर्पण होता है मन-बुद्धि का समर्पण। जब हम तन के साथ मन-बुद्धि को परमात्मा पर अर्पण कर देते हैं, उनकी श्रीमत के अनुसार चलते हैं तो फिर परमात्मा जिन्हें परमेश्वर कहते हैं वह हमारी हर पल, हर क्षण ख्याल रखते हैं, मदद करते हैं। परमात्मा को पाने के बाद जीवन में कुछ पाना शेष नहीं रह जाता है। जिसने स्वयं सृष्टि के रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के स्वामी को अपना बना लिया तो उनसे भाग्यवान कोई हो नहीं सकता है। अहमदाबाद की सुप्रसिद्ध संगीतकार डॉ. दामिनी बहन ने आध्यात्मिक गीतों की प्रस्तुति दी। मप्र उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायामूर्ति बीडी राठी ने कहा कि कहते हैं बेटियां दो कुल का उद्धार करती हैं लेकिन ये बेटियां हजारों परिवारों का उद्धार करने के निमित्त बनेंगी।

### भोपाल की दो बेटियों ने ईश्वरीय सेवा में समर्पित किया जीवन

**शिव आमंत्रण, भोपाल |** ब्रह्माकुमारीज़ भोपाल के ब्लेसिंग हाउस सेवाकेन्द्र द्वारा दिव्य अलौकिक समर्पण समारोह आयोजित किया गया। दुल्हन के रुप में दो कन्याएं बीके कुंती और बीके आरती सजधजकर स्टेज पहुंचीं जहां परमात्मा को अपना जीवनसाथी स्वीकारते हुए माला पहनाई। बाराती के रुप मे भोपाल के सैकड़ों नगरवासी एवं बाहर से आए हुए अतिथि शामिल हुए। बैंड-बाजे एवं गाजे-बाजे के साथ बारात ब्लेसिंग हाउस से निकली। इसमें विशेष विंटेज कार में सवार होकर कन्याएं चलीं। वहीं बारात में सैकड़ों लोगों के साथ ब्रह्माकुमारी दीदियां खुशी में शिव परमात्मा के गीतों में मगन होकर डांस करते हुए चल रहीं थी। बारात होशंगाबाद रोड स्थित वृंदावन गार्डन में समाप्त हुई, जहां पर दिव्य अलौकिक प्रभु समर्पण समारोह आयोजित किया गया। माउंट आबू से बीके शारदा दीदी और ज़ोन की निदेशिका बीके अवधेश दीदी विशेष रुप से उपस्थित थीं। गुलमोहर डिवाइन ग्रुप के बच्चों ने सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर समां बांध दिया। समर्पण के पूर्व दोनों बहनों ने सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके डॉ. रीना दीदी के साथ बाबा के कमरे में पावरफुल ध्यान किया एवं भोपाल ज़ोन की वरिष्ठ दीदियों से आशीर्वाद प्राप्त किया।

### तीन कन्याओं ने जीवनसाथी के रूप में परमात्मा को स्वीकारा

**सुनाम/संगरुर (पंजाब) |** ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से महाराजा महल में दिव्य समर्पण समारोह आयोजित किया गया। तीन कन्याओं ने ब्रह्मचर्य व्रत का संकल्प लेते हुए अपना जीवन ब्रह्माकुमारी के रुप में समर्पित करने का संकल्प लिया। समारोह के एक दिन पूर्व रथयात्रा निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया। समारोह में कैबिनेट मंत्री अमन अरोड़ा, बीके प्रेम दीदी, बीके विजय दीदी, बीके कैलाश दीदी, बीके शांता दीदी, पानीपत के ज्ञान मानसरोवर के भारत भूषण भाई, बीके विजय भाई, राज दीदी संगीता दीदी, राधेश्याम भाई विशेष रुप से मौजूद रहे।

## आत्मनिर्भर किसान सम्मेलन

# यौगिक खेती से बदलेगी तस्वीर

**शिव आमंत्रण, बहादुरगढ़ (हरियाणा)।** ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा सेक्टर-6 स्थित कम्युनिटी सेंटर में आत्मनिर्भर भारत किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें हजारों की संख्या में आसपास के गांवों के किसानों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि हरियाणा सरकार के कृषि मंत्री जय प्रकाश दलाल ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किसानों के कल्याण के लिए चलाए जा रहे अभियान की सराहना की। उन्होंने कहा कि इससे किसानों की तरक्की होगी। नए युग का आधार शाश्वत यौगिक खेती विषय पर आयोजित सम्मेलन में गुजरात से पधारीं ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी बीके सरला दीदी ने कहा कि वर्तमान समय की मांग है कि खेती की गुणवत्ता को सुधारने के लिए आध्यात्मिक क्रांति लाई जाए। इससे किसानों की दशा भी सुधरेगी और अनाज की पैदावार भी अधिक होगी। जहरीले रसायनों के प्रयोग को छोड़कर अपनी पुरानी ऋषि कृषि पद्धति को अपनाकर साथ-साथ उसमें परमपिता परमात्मा की याद से यदि हम खेती करते हैं तो हम कम खर्चे में अधिक पौष्टिक पैदावार का उत्पादन कर सकते हैं। महाराष्ट्र से पधारीं बीके मनीषा दीदी ने खेती में कैसे राजयोग का अभ्यास करें इसका प्रैक्टिकल कराया। कर्नाटक से पधारे बीके लक्ष्मण, बीके शेखर ने सैंपल के रूप में फल और सब्जियां दिखाईं और अनुभव को साझा किया। सभी को व्यसन छोड़ने की सभी से प्रतिज्ञा भी कराई गई। कार्यक्रम में पूर्व विधायक नरेश कौशिक, नप अध्यक्ष सरोज राठी, पूर्व अध्यक्ष कर्मवीर राठी, अशोक गुप्ता, सीएम विंडो एमिनेंट पर्सन दिनेश शेखावत मौजूद रहे। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके अंजली दीदी ने यौगिक खेती के बारे में बताते हुए सभी का आभार माना।

# ब्रह्माकुमारीज़ मूल्यों की खुशबू फैला रहा है : महामंडलेश्वर

**शिव आमंत्रण, हरिद्वार।** ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर संत स्नेह मिलन आयोजित किया गया। इसमें अवधूत मण्डल आश्रम के परमाध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी संतोषानन्द महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारी विद्यालय समाज में मूल्यों की खुशबू फैला रहा है। रक्षाबंधन जैसे पवित्र त्योहार के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारी बहनें हरिद्वार के सभी प्रमुख सन्तों को राखी बांध कर संत समाज की दुआएं और रक्षा का वचन भी प्राप्त कर रही हैं।

शंकर आश्रम के महामंडलेश्वर स्वामी दिनेशानन्द महाराज ने कहा कि इस समय समाज को सुख, शान्ति और संयम की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। यह विश्व विद्यालय राजयोग के माध्यम से समाज के हर वर्ग को सुख शान्ति और संयम सिखा रहा है। इसकी जितनी प्रशंशा की जाए उतनी कम है।

श्री गरीबदासीय आश्रम के अध्यक्ष महन्त डॉ. हरिहरानन्द ने कहा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी संत गोष्ठी का आयोजन किया गया है, यह ब्रह्माकुमारी बहनों की बहुत पुरानी परंपरा रही है। श्री गरीबदासीय, आश्रम के सहअध्यक्ष महन्त रविदेव शास्त्री ने कहा कि वैसे तो संतों की कोई बहन नहीं होती परन्तु ब्रह्माकुमारी बहनों का स्नेह पाकर आत्मा बहुत प्रसन्न होती है।

प्रयागराज से आईं धार्मिक प्रभाग अध्यक्षा बीके मनोरमा दीदी राखी का आध्यात्मिक रहस्य समझाया। बीके मंजू दीदी, बीके मीना दीदी एवं बीके सुशील भाई ने सभी का मुख मीठा कराया। कार्यक्रम में 40 सन्त-महात्माओं ने भाग लिया।

## विधायक को प्रदान किया स्मृति चिंह

**धड़गांव/महाराष्ट्र। धड़गांव सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी सरिता दीदी द्वारा आसपास के पर्वतों पर आदिवासी भाई-बहनों की सेवा की जा रही है। इस दौरान विधायक राजेश दादा पाडवी के निवास स्थान सोमवाल पर उनसे मुलाकात की। साथ ही उन्हें राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुए परमपिता शिव परमात्मा के स्मृति चिंह प्रदान किया।**

## बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर से की मुलाकात

**शिव आमंत्रण, बड़ामलहरा/छतरपुर (मप्र)।** कृषि उपज मंडी में चल रही हनुमंत कथा में कथा व्यास बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री का ब्रह्माकुमारीज बड़ामलहरा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके रूपा बहन एवं मोहिनी बहन द्वारा सम्मान किया गया। इस दौरान उन्होंने ब्रह्माकुमारी बहनों से छतरपुर जिले में सेवारत बहनों का हाल-चाल पूछा और मुख्यालय माउंट आबू जाने की इच्छा जताते हुए जल्द पहुंचने का कहा।

## नई राहें

**बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक**
शिव आमंत्रण, शांतिवन

# 'आत्मज्ञान का प्रकाश'

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।** ज्ञानी अर्थात् समझदार, योग्य, जानकार। हर कर्म युक्तियुक्त, समयानुकूल करने वाला। धर्म-ग्रंथों में ज्ञानियों की अलग-अलग तरह से व्याख्या की गई है। ज्ञान ही वह प्रकाश है जो व्यक्ति को यश, कीर्ति, धन, मान-सम्मान दिलाता है। ज्ञान मन के अंधकार को समाप्त कर जीवन को प्रकाशित कर देता है। ज्ञानी हर जगह आदर और सम्मान पाता है। लेकिन सवाल ये है कि ज्ञान सिर्फ विचारों में हो और कर्मों की कसौटी पर नदारद हो तो क्या वह ज्ञानी कहलाने के योग्य है? संसार में सच्चा ज्ञानी वही है जिसने स्वयं को और सृष्टि के सृजनहार को यथार्थ रूप में जाना है। आत्म ज्ञान और परमात्मा ज्ञान को जाना है। सृष्टि चक्र और कर्मों की गहन गति को जाना है। कालखंड की कहानी को जाना है। संसार में रहते हुए कमल पुष्प समान जीवन जीने की कला को जाना है।

### विदुर के अनुसार ज्ञानी कौन है?

महाभारत में एक वृतांत है कि धृतराष्ट्र ने एक बार विदुर से पूछा कि ज्ञानी कौन है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए विदुर ने कहा कि महाराज! जो व्यक्ति दुर्लभ वस्तु को पाने की इच्छा न रखता हो, नाशवान वस्तु के विषय में शोक नहीं करता हो, मुसीबत आने पर घबराते नहीं हो और उसका पूरी क्षमता से सामना करता है ऐसे व्यक्ति ज्ञानी कहलाते हैं। वह व्यक्ति जो अपने कार्य को पूरे उत्साह से आरंभ करता है और बिना रूके उसे परिणाम तक पहुंचाता है। मन को नियंत्रित करके रखता है। ऐसा व्यक्ति भी ज्ञानी कहलाने का अधिकार रखता है। सम्मान पाकर भी अहंकार न करे वह भी ज्ञानी है। जो व्यक्ति प्रशंसा और सम्मान पाकर भी अहंकार न करे और अपमान को सहन करने की क्षमता रखता है। समुद्र की गहराई की भांति गंभीरता हो ऐसे व्यक्ति वह ज्ञानी होते हैं।

### परमात्मा की श्रीमत ही श्रेष्ठ ज्ञान-

परमात्मा की दी हुई श्रीमत को यथार्थ रूप में जीवन में साकार करना ही श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ और परम ज्ञान है। परमात्म ज्ञान से अपने जीवन को संवारना, श्रेष्ठ संकल्पों की पूंजी जमाकर महान कर्मों से जीवन बगिया को कमल पुष्प समान बनाकर परम लक्ष्य को प्राप्त करने में रमी मनुष्य आत्मा ही सच्ची ज्ञानी है। जीवन में जब ज्ञान का प्रकाश उदित हो जाता है तो परिस्थितियां, समस्याएं और परेशानियां नगण्य हो जाती हैं। ज्ञानी पुरुष सम-विषम दोनों परिस्थितियों में एक समान और स्थितप्रज्ञ होता है। उसका व्यक्तित्व पर्वत की तरह अडिग और स्थिर, आसमान की तरह विशाल, समुद्र की तरह गहरा होता है। जीवन ज्ञान की असली परीक्षा कर्मों में आने पर होती है। लेकिन जिसके कर्मों में महानता की झलक दिखे, जिसे दूसरे अनुकरण करना चाहें जिसके पदचिंह्नों पर चलना चाहें ऐसे महापुरुष ज्ञानी कहे जाते हैं।

### परमात्मा खुद देते हैं आत्म और परमात्म ज्ञान-

कालखंड में कलियुग के अंत और सतयुग के आदि में कल्पानुसार अनोखी घटना घटित होती है। जब स्वयं निराकार परमपिता परमात्मा इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अवतरित होकर साधारण मानव तन (प्रजापिता ब्रह्मा) का आधार लेकर सच्चा गीता ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं। वह मनुष्य को नर से श्रीनारायण और नारी को श्रीलक्ष्मी के समान बनने की शिक्षा देते हैं। परमात्मा जहां बाप के रूप में पालना करते हैं तो शिक्षक के रूप में ईश्वरीय ज्ञान की शिक्षा देते हैं। सदगुरु के रूप में वरदानों से हमारी झोली को भरपूर करते हैं। परमात्मा कहते हैं कि मेरे बच्चे, मुझसे योग लगाओ तो मैं तुम्हें पापों से मुक्त कर दूंगा। तुम्हें स्वर्ग की बादशाही दूंगा और जन्मोंजन्म के लिए भाग्य के द्वार खोल दूंगा।

लेकिन इस परम और सत्य ज्ञान को समझ पाना, इसे शिरोधार्य कर अपने जीवन को ऊंच बनाना आसान है। जब हम परमात्म शिक्षा और ज्ञान को यथार्थ रीति जीवन में उतारते हैं तो यह उतना ही आसान और सरल हो जाता है। राजयोग ही वह दिव्य ज्ञान है जो नए युग का सूत्रपात करता है। राजयोग की परम शिक्षा मनुष्य के अंधकार और तमस को मिटाकर ज्ञान प्रकाश से प्रकाशित कर देती है। यह दिव्य ज्ञान पाकर आज एक दो नहीं बल्कि लाखों लोग अपने जीवन को ऊंच और महान बना चुके हैं। उनका जीवन कौड़ी से हीरे तुल्य बन गया है। रोज वह परमात्म मिलन का अतीद्रिंय सुख के झूले में झूलते हुए अनुपम सुख का आनंद लेते हैं। परमात्म वरदान, शिक्षा और श्रीमत ही उनके जीवन का आधार है। आप भी इस परम ज्ञान को जीवन में अपनाकर अपना जीवन श्रेष्ठ, ऊंच और महान बना सकते हैं।

# आओ करें, सुविचारों का शुभ मंगल आगमन...

मन के अशुद्ध विचार-विकार को सदा-सदा के लिए दे दें विदाई

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

दीपावली का त्यौहार आते ही चारों ओर उमंग उत्साह की लहर छा जाती है। क्योंकि दीपावली अपने आप में पांच त्योहारों को लेकर आती है। वास्तव में देखा जाए तो यह पांच त्योहार मनुष्य जीवन की पांच पुरुषार्थ की बात है। इसलिए हर रीति से इंसान को सुखी संपन्न बनाने के लिए यादगार त्यौहार है। तभी इतना खुशी, हर्षोल्लास के साथ दीपावली मनाई जाती है। विशेषकर पहला पुरुषार्थ जो है वह है सफाई का अर्थात् शुद्धि का। मनुष्य घरों की सफाई करते हैं। अपने स्थान की सफाई करते हैं। वास्तव में सर्वप्रथम सफाई की जरूरत मन-वचन-कर्म को साफ करना। हमारे दृष्टि और वृत्ति की सफाई करनी है। मन के अंदर से नकारात्मक और अशुद्ध विचार को हम दूर करें। श्रेष्ठ सकारात्मक विचारों को ले आएं, यही मन की शुद्धि है। वाणी की शुद्धि अर्थात् बोल में मधुरता ले आएं। कर्म की शुद्धि और व्यवहार की शुद्धि अर्थात् अपने संस्कारों में श्रेष्ठता लाएं और हमारा व्यवहार कर्म एक-दूसरे के साथ बहुत मधुर हो। नेचुरली जब यह शुद्धि हम अपने अंदर लाते हैं तो दृष्टि-वृत्ति के अंदर पवित्रता सहजता से आ सकती है। वास्तव में सफाई से मतलब पवित्रता और शुद्धि को अपने जीवन में लाना है।

### जीवन में लाएं नवीनता...

दूसरा पुरुषार्थ दीपावली में होता व्यापारी अपने पुराने खाते को समाप्त कर नया बहीखाता आरंभ करते हैं। अर्थात् आज तक हमने कईयों के साथ जो भी मनमुटाव हुआ हो, कोई बुरा व्यवहार हो गया हो, उन पुराने खातों को समाप्त करें पुरानी बातों को समाप्त करें और आज से नए खाते का आरंभ करें अर्थात् नवीनता अपने जीवन के अंदर ले आएं। इसलिए व्यापारी लोग जब नई बहीखाता आरंभ करते हैं तो उस पर शुभ-लाभ जरूर लिखते हैं। शुभ लाभ तो तभी होगा जब लाभ का उल्टा करेंगे अर्थात भला करेंगे। जब हम सबका भला चाहते हैं, सबके प्रति शुभ भावनाएं और शुभकामनाएं मन में प्रवाहित होने देते हैं तब ही तो शुभ-लाभ की प्राप्ति होगी। फिर स्वास्तिका निकालते हैं इसको बनाकर श्रीगणेश करते हैं। स्वास्तिका शब्द संस्कृत के सु-अस्ति शब्द से आया है। 'सु' माना शुभ और 'अस्ति' माना जो सदा ही शुभ है। मतलब जीवन के अंदर हर एक पल जो कुछ भी होता है, इसी दृष्टिकोण से हम देखे हैं कि यह बात जो हुई हमें क्या चीज प्राप्त हुई। हमारे जीवन के अंदर कौन सा अनुभव को प्राप्त किया। वास्तव में देखा जाए तो बुरा कुछ भी होता है ही नहीं। कुछ भी परिस्थिति, समस्याए आती है तो हमें जीवन में अनुभवी बना कर जाती है।

## मन का आत्मदीप जलाएं, सच्ची दीवाली मनाएं...

### सदा परमात्मा की याद में ही बनाएं भोजन

दीवाली पर सभी मिठाई खाते हैं अर्थात् जो बोल हमारे मुख से निकले वह दूसरे को सुख दें। वह बोल मिठास और सम्मान से भरा हो। कोई गलती भी करे उसको भी शिक्षा देनी है, लेकिन मिठास से देनी है। लेकिन कई बार अगर हम ध्यान न रखें तब अच्छी बात भी बोलने के दौरान उसमें टोंट होता है। हमें लगता है हमने तो अच्छे से बात की लेकिन उसके अंदर एक भी कोई नेगेटिव बात हो तो दूसरे तक वह नेगेटिव एनर्जी पहुंच जाती है। उसको दर्द देती है, इसलिए हमेशा मीठे बोल और सम्मान भरा बोल बोलना चाहिए। खुद भी बोलें जिससे हमारा मन मीठा हो जाएगा और जिसके साथ वह बोल बोलेंगे उनका भी मन और मुख हमेशा मीठा रहेगा। पहले मिठाई बनाने का संस्कार था। मतलब जो हम घर में बना रहे हैं वह प्रसाद बना रहे हैं तो मिठाई खुद बनाना और परमात्मा की याद में बनाना और खाना है। ताकि वह बनाते समय परमात्मा की याद की शक्ति, शांति की शक्ति, दुआओं की शक्ति, प्यार की शक्ति उस मिठाई के कण-कण में रहे। तो वह सिर्फ मिठाई में नहीं हर रोज के भोजन में होना चाहिए। भोजन परमात्मा की याद में बनाया जाए और फिर भोग लगाकर परमात्मा की याद में खाया जाए क्योंकि वह प्रसाद बना है। परमात्मा को भोग लगाकर उसमें परमात्म वाइब्रेशन को इस तरह भर दें कि जो इस मिठाइयों और भोजन का थोड़ा निवाला भी खा ले तो उसे खाते ही परमात्मा की शक्ति, परमात्मा का प्यार और परमात्मा के साथ कनेक्शन जुड़ जाए। तब जिसका कनेक्शन परमात्मा से जुड़ जाएगा तब तो उसका जीवन हमेशा मीठा और खुशनुमा रहेगा।

### सभी को खिलाएं दिलखुश मिठाई...

**दीपावली रावण के हार का उत्सव है। आइए इस दिवाली पर अपने अंदर के रावण को खत्म करते हैं। सिर्फ चार दिन की दीवाली नहीं जीवन ही दीवाली है। मिट्टी के इस शरीर में मैं पवित्र आत्मा हूं। यह दिया जब हम जलाते हैं तब अहंकार का अंधेरा खत्म हो जाता है। शांति का धर्म और प्यार की भाषा समान की सयता और एकता की संस्कृति ऐसी दुनिया हम सबको मिलकर बनानी है। इस सृष्टि पर हमें दीवाली लानी है। पुरानी बातें दबी पड़ी हैं। गलतफहमी की धूल चढ़ी है। अपमान के दाग लगे हुए हैं। यादें जिनकी अब जरूरत नहीं है। आइए, घर के साथ-साथ मन के कोने-कोने में सफाई करते हैं। नए कपड़े, नए बर्तन, दीवाली नवीनता का समय है। जीवन को शुद्ध बनाने के लिए नई सोच, नया व्यवहार, एक नया संस्कार अपनाते हैं। दीवाली पर हम सबको बहुत सुंदर तोहफा देना चाहते हैं- मेवा, चॉकलेट, मिठाई। इस दीवाली रिश्तों में मिठास भरते हैं। मीठे बोल, प्यार भरे बोल, समान भरे बोल, उन्हें और हमें दोनों को खुशी देते हैं। आइए सबको दिलखुश मिठाई खिलाते हैं।**

### ज्ञान, चरित्र, श्रेष्ठ संस्कार, सद्गुणों रूपी धन का भी संचय करें...

दीपावाली पर सभी धन का आह्वान करते हैं अर्थात् श्रीलक्ष्मी जी का आह्वान करते हैं। धन की पूजा करते हुए वास्तव में हम अपने जीवन के अंदर शुभ भावनाएं और शुभकामनाएं को प्रवाहित करते हैं। तभी अपने संस्कारों में श्रेष्ठ लक्षणों अर्थात् श्रीलक्ष्मी जी का आह्वान करते हैं। तब घर-घर के अंदर दीपक जग जाता है अर्थात जब हम श्रीलक्ष्मी जी का आह्वान करते हैं तो आत्मिक ज्योत जगाते हैं। आत्मिक ज्योत का भाव है जब आत्मा की ज्योति जलती है, तब उसके जीवन में अनेक प्रकार का धन जैसे छलकने लगता है। ज्ञान धन, सद्गुणों का धन, श्रेष्ठ चरित्र का धन, श्रेष्ठ संस्कारों का धन, क्योंकि आज संसार में इस बातों का अभाव है, सिर्फ धन का भाव नहीं है। अर्थात मनुष्य जीवन के अंदर ज्ञान, चरित्र, श्रेष्ठ संस्कार, सद्गुणों का अभाव है। इस वास्तविक धन का अभाव है जिसको अपने जीवन में आह्वान करते हुए जीवन को सजाएं। इसलिए दीपावली के दिन लोग नए वस्त्र को धारण करते हैं, नवीनता को अपनाते हैं अर्थात् अपने जीवन के अंदर इस तरह की नवीनता को अपनाते हुए श्रेष्ठ दीपावली जरूर मनाना है।

**ओआरसी में जनसंपर्क एवं मीडिया कर्मियों की संगोष्ठी आयोजित**

## संस्कृति और संस्कारों का सम्मान जरूरी

**गुरुग्राम (हरियाणा)**। ब्रह्माकुमारीज के भोराकलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में जनसंपर्क एवं मीडिया कर्मियों के लिए संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें जनसंपर्क और मीडिया से जुड़ी नामचीन हस्तियों ने शिरकत की। अलग-अलग सत्रों में अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे। समापन पर एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया के महाप्रबंधक, गुरुमुख भावा ने कहा कि हमें स्पिरिचुअल एनरिचमेंट की जरूरत है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस केवल भौतिक उन्नति का माध्यम है। सुप्रीम कोर्ट की वरिष्ठ अधिवक्ता, प्रियदर्शनी ने कहा कि जब तक हम संस्कृति और संस्कारों का सम्मान नहीं करते, तब तक चाहे कितनी भी भौतिक उन्नति कर लें कोई फायदा नहीं होगा। मीडिया कंसल्टेंट, दिव्या मिगलानी, एयर इंडिया के पूर्व कार्यकारी निदेशक जितेंद्र भार्गव सेंटर फॉर कम्युनिकेशन की संस्थापक-निदेशक एवं राष्ट्रीय जनसंपर्क परिषद की अध्यक्ष, गीता शंकर, एडवाइजर एवं ट्रेनर, डॉ.अजय अग्रवाल, मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके सुशांत, बीके अदिति, दिल्ली मंडावली सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सुनीता, भोपाल से आईं डॉ. बीके रीना ने भी अपने विचार रखे।

## शांति की शुरुआत स्वयं से होती है

**ओक्लाहोमा, यूएसए**। ओक्लाहोमा सिटी में ब्रह्माकुमारीज़ और द रेस्पेक्ट डायवर्सिटी फाउंडेशन द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि यूयॉर्क से आए एरिक लार्सन ने शांतिः व्यक्तिगत, सामुदायिक, वैश्विक विषय पर कहा कि शांति की शुरुआत स्वयं से होती है। जब हमारा मन शांत होगा तभी हम दूसरों के लिए शांति की कामना कर सकते हैं। ओक्लाहोमा सेवाकेंद्र प्रभारी सिस्टर बिंदू ने राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुए सभी को राजयोग से गहन शांति की अनुभूति कराई। वहीं विश्व धर्म एक्सपो में संस्थान की ओर से स्टाल लगाया गया। इस मौके पर ओक्लाहोमा सिटी मेयर जेपीजी सहित बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021-23, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Oct. 2023
» स्वामीः राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन » प्रकाशक, संपादक व मुद्रकः ब्र.कु. कोमल द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र